ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

आश्विन २०७५ अक्टूबर २०१८

महात्मा गांधी सार्द्धशती

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ सत्र प्रारंभ

22 अक्तूबर

दोपहर 3:00 बजे

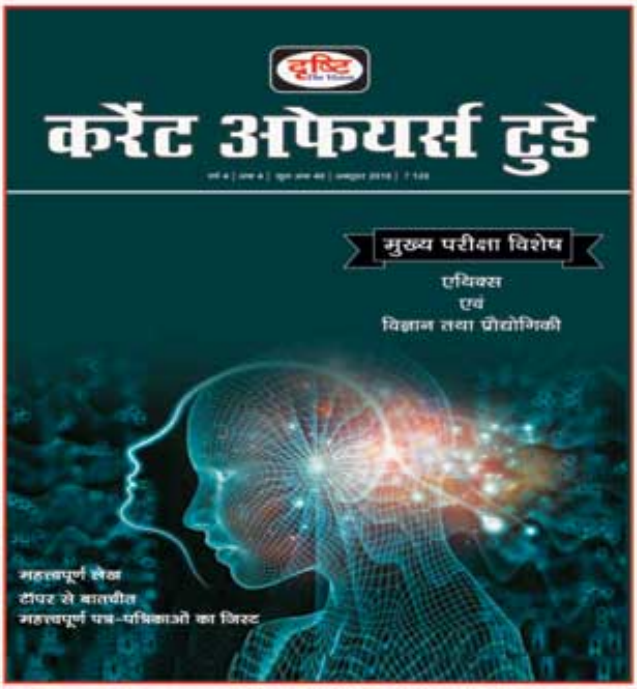

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं
अपनी लोकप्रिय वेबसाइट और यू-ट्यूब चैनल पर

www.drishtiIAS.com

Visit us: YouTube / DrishtiIAS & SUBSCRIBE

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें– (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011- 47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आश्विन २०७५ ▪ वर्ष ३९
अक्टूबर २०१८ ▪ अंक ४

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या –53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

हम सबने कभी सोचा भी न होगा कि स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से जब देश के प्रधानमंत्री राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर बोलते हैं तब हमारे प्रधानमंत्री जी वहाँ से स्वच्छता की बात करेंगे। देशभर में लोग पहले तो चौंके परन्तु जब स्व्यं प्रधानमंत्री जी झाड़ू लेकर सड़कों पर उतर आए तो देखते ही देखते स्वच्छता आन्दोलन भारतीय इतिहास का एक यशस्वी आन्दोलन बनकर हमारे समक्ष आया। प्रथम दिवस से ही प्रधानमंत्री जी ने हमसे अपेक्षा की थी कि हम सब पूज्य बापू महात्मा गाँधी जी की १५०वीं जन्म जयंती तक पूरे भारत का चित्र बदलने का प्रयास करें। विदेशों में इतने वर्षों में जो हमारी नकारात्मक छवि बनी है उससे हम मुक्ति प्राप्त कर लें। देखते ही देखते भारत ने करवट बदली। आज हम गर्व से कह पाते हैं कि हम भी एक स्वच्छ देश के नागरिक हैं और किसी अन्य देश से हम भी कम नहीं।

बच्चो! गांधीजी के तीन बंदर आप सबको बड़ा आकर्षित करते रहे हैं। करें भी क्यों नहीं? वे संदेश ही इतना सुन्दर देते हैं- **'पहला बुरा मत देखो, दूसरा बुरा मत सुनो और तीसरा बुरा मत बोलो।'** इस बार के आवरण हेतु हमारे आग्रह पर अपने परिवार के वरिष्ठ चित्रकार श्री सारंग क्षीरसागर ने एक बहुत सुन्दर चित्र आप सबके लिए उकेरा है। बापू की १५०वीं जन्म जयंती पर यह संदेश स्पष्ट है कि अब तो गांधीजी के तीनों बन्दर भी अपने पुराने संदेश के साथ-साथ नए संदेश देने लगे हैं- **'पहला गन्दगी नहीं करूंगा, दूसरा गंदगी नहीं करने दूंगा और तीसरा यदि भूलवश किसी ने गंदगी कर ही दी तो मैं किसी और की प्रतीक्षा किए बगैर उसे साफ कर दूंगा।'** आइए हम सब भी प्रधानमंत्री जी के इस संकल्प में सहभागी बनें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- मानवता - भगवती प्रसाद द्विवेदी १४
- राणी रासमणि - शिवचरण मंत्री २०
- अनोखा उपचार - डॉ.अमिताभ शंकर राय चौधरी २८
- रोबो और टोटो - रामेश यादव ३२
- अन्तर्ध्वनि - कमला प्रसाद चौरसिया ३७
- फोकटराम ने दावत... - डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ४०

लघुनाटिका

- बापू की कहानी - शिवकुमार चवरे ०५

रेखाचित्र

- अच्छा जैराम जी की -डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' १०

कविता

- लाल बहादुर - मधुर गंज मुरादाबादी १३
- रावण चलो जलाएं - राजनारायण चौधरी २३
- लौह पुरुष - हेमराज पाटीदार 'हमराही' ३५

प्रसंग

- प्रायश्चित - डॉ. जमनालाल बायती ०८
- गांधी जी के तीन गुरु - मोहन उपाध्याय ०९

आलेख

- महारानी दुर्गावती - डॉ. इन्दु राव १७
- कर्मोपासक डॉ. कलाम - डॉ. चक्रधर नलिन ४२

चित्रकथा

- किसका चारा - देवांशु वत्स ३१
- अनूठा यूरेनस - संकेत गोस्वामी ४४
- अनोखा ठग - देवांशु वत्स ५०

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १२
- गाथा वीर शिवाजी की (२१) - १८
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा' २४
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल २७
- आपकी पाती - ३०

बाल प्रस्तुति

- शहीद की नीयत - अनमोल सोनी ३९

अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

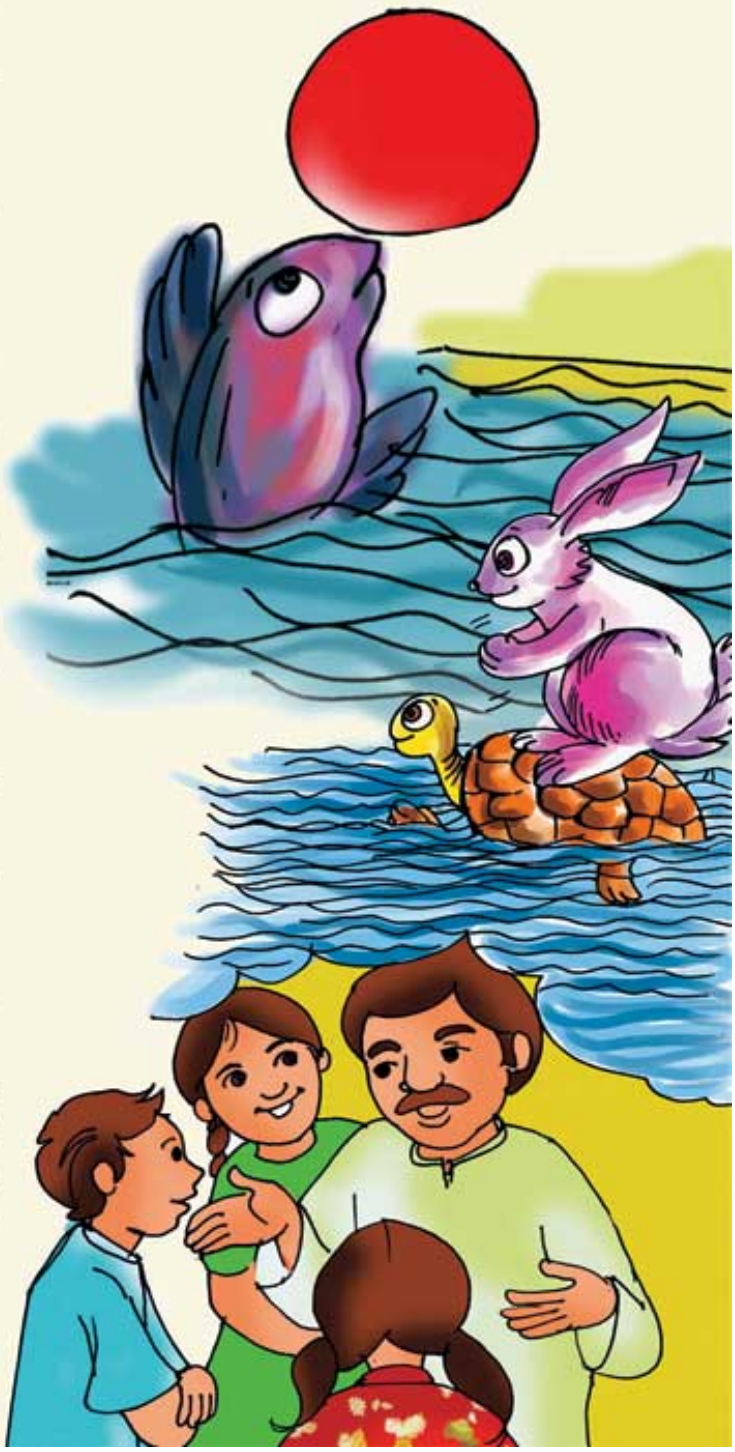

(२ अक्टूबर : गाँधी जयंती)

बापू की कहानी

लघु नाटिका : शिवकुमार चवरे

पात्र
दादा, बच्चे

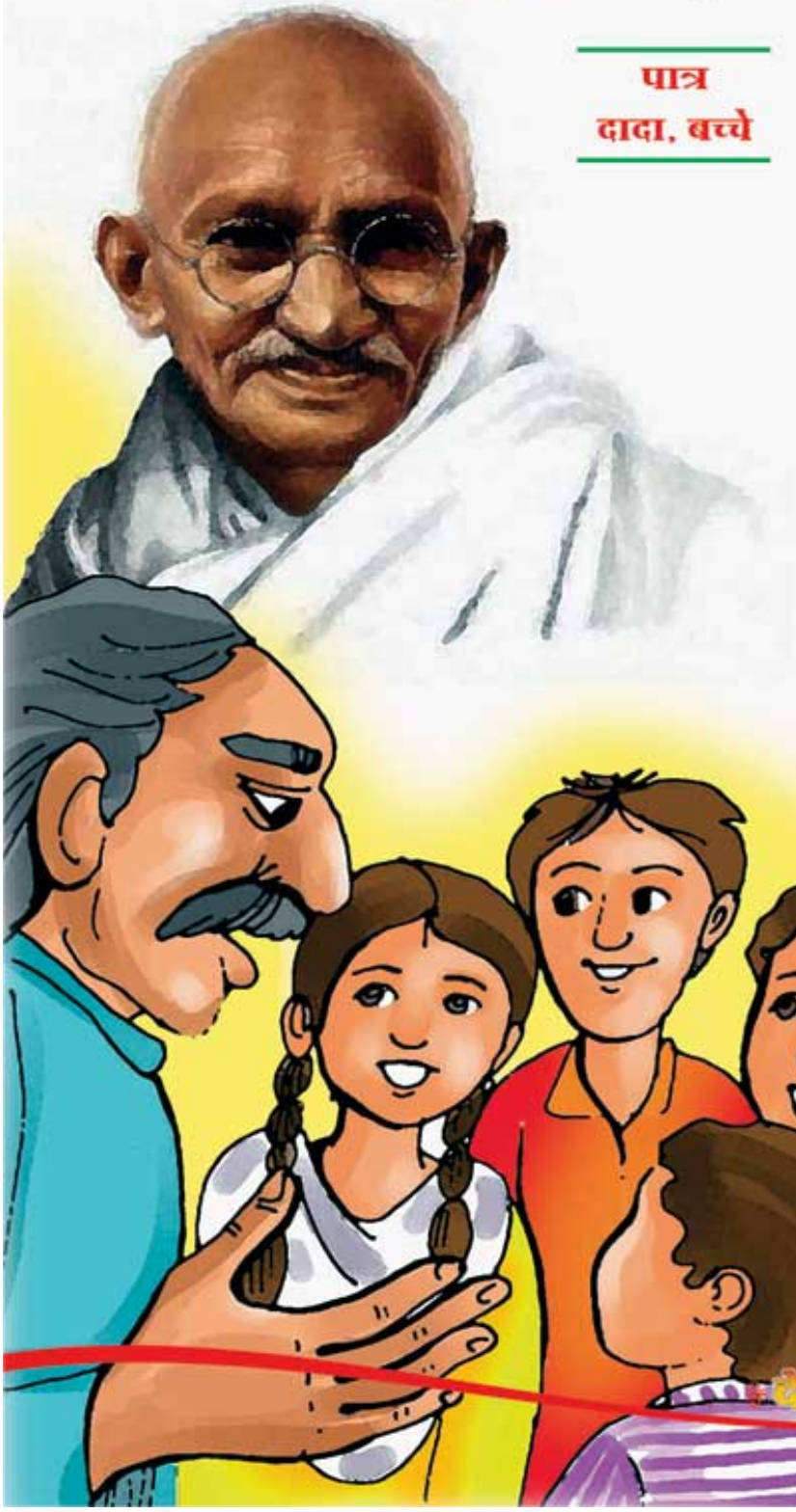

दादा– आओ बच्चो आओ।
बच्चे – एक कहानी हमें सुनाओ।
दादा– कहानी।
बच्चें– हाँ।
दादा– अच्छा तो सुना।
एक था राजा, एक थी रानी
बच्चें– नहीं, नहीं, नहीं।
यह तो हो गई बहुत पुरानी।
दादा– अच्छा तब
बच्चे – हम तो सुनेंगे नई कहानी।
दादा – नई कहानी।
बच्चे – हाँ, दादाजी बिलकुल नई।
दादा– अच्छा बच्चो सुनो।
आज सुनाएँ तुम्हें कहानी
ऐसे संत महान की
जिसने अपनी जान लगा दी
सेवा में इंसान की।
बच्चे – हाँ दादाजी, हाँ दादाजी।

वही कहानी हमें सुनाओ।
दादा– अच्छा बच्चो चुप हो जाओ।
तो सुनो,
आज सुनाएँ तुम्हें कहानी,
ऐसे संत महान की
जिसे अपनी जान लगा दी
सेवा में इंसान की।
दुबली पतली कंचन काया,
लिपटी निर्मल खादी में।
लगा लंगोटी, अलख जगा दी।
भारत की आजादी में।
खुले हाथ से कूद पड़ा वह।
जालिम के हथियारों पर
सत्य अहिंसा, सेवा ढंक दी।
शासन के अंगारों पर।
सभी धर्म का एक मंत्र था।
उसकी मीठी बोली में।
(नेपाथ्य से)
(रघुपति राघव राजाराम)
सभी धर्म का एक मंत्र था।
उसकी मीठी बोली में।
थी अनमोल वाणियाँ जिसकी
जादू वाली झोली में–
(वैष्णव जण तो तेणे कहिये
जो पीड़ पराई जागे रे
वैष्णव जण तो तेणे कहिये)
थी अनमोल वाणियाँ जिसकी,
जादू वाली झोली में,
(नेपाथ्य से)
(पर दुःखे उपकार करे तो–
मन अभिमान न आणे रे
वैष्णव जण तो तेणे कहिये)
रोगी हरिजन दुखी सभी की
सेवा जिसने की थी मौन
अच्छा बच्चो तुम्हीं बताओ,
ऐसा संत हुआ है कौन?
बच्चे – हम बतावें
दादा– हाँ बच्चो बताओ
बच्चे – ऐसे सन्त हुए है, 'बापू'
दादा– वाह वाह! बच्चो वाह वाह!!
तुम तो बड़े चतुर हो।
बच्चे – फिर क्या हुआ दादा,
दादा– फिर बापू ने–
आजादी की छेड़ी जंग,
इस दुबले महामानव ने।
कर डाल देखो
अंग्रेजों का कानून भंग।
तब बापू ने–
सत्याग्रह का शंख बजाया
देश का झण्डा फिर लहराया।
तब जालिम ने भर दी जेल
और दमन का खेला खेल।
बच्चे– तब,
दादा– तब बापू ने दिया यह नारा
''करो या मरो यह देश हमारा।''
बच्चे – करो या मरो
दादा– तब–
देश की दीवानों की चली टोलियाँ,
गली गली गूंज उठी यही बोलियाँ।
(वन्दे मातरम्, भारत माता की जय)
और सुनो बच्चो–
जैसे दीवानों की टोली चली
अंग्रेजी शासन की होली जली
(धू, धू, धू, धू, धू)
बच्चे – (तालियां बजाते हैं)
(धू, धू, धू, धू, धू)
दादा– हाँ,
अंग्रेजी शासन की होली जली,
(धू, धू, धू, धू, धू)
जैसे दीवानों की टोली चली
फिर लाठी चली, फिर गोली चली,
फिर टोली चली–
(वन्दे मातरम्, भारत माता की जय)
फिर लाठी चली,
(फट, फटा, फट, फट)
फिर टोली चली (वन्दे मातरम्)
फिर गोली चली–
(दन, दना, दन, दन, दना, दन)
बच्चे– अरे बाप रे (डरते हैं)
दादा– डर गये, पर वे नहीं डरे,
लाठी चली, फिर गोली चली,
फिर भी दीवानों की टोली चली
(वन्दे मातरम्, भारत माता की जय)
फिर गोली चली
(दन, दना, दन)
फिर टोली चली, फिर लाठी चली।
फिर गोली चली–

फिर भी दीवानों की टोली चली–
(वन्दे मातरम्, भारत माता की जय)
बच्चे– फिर क्या हुआ दादा।
दादा – फिर
लाठी चली और गोली चली,
देश में खून की होली जली,
लाशों से भर दी थी गली गली,
मुर्दों के मुंह से भी बोली चली,
(वन्दे मातरम्, भारत माता की जय)
जालिम की सत्ता भी कांप उठी थी,
धरती से अम्बर तक गूंज उठी थी।
(वन्दे मातरम्, भारत माता की जय)
बच्चे– तब क्या हुआ।
दादा– तब,
धरती से अंबर तक गूंज उठी थी,
जालिम की सत्ता भी कांप उठी थी।
अंग्रेजी सत्ता के टूट गये तार,
जालिम ने डाल दिये सब हथियार।
और बापू ने कर दिया कमाल,
(वन्दे मातरम्, भारत माता की जय)
साबरमती के संत ने तो कर दिया कमाल
अंग्रेजी हुकुमत को दिया देश से निकाल,
आजाद हुए हम, हुआ देश हमारा,
आनंद भरे दिल से यही सबने पुकारा,
महात्मा गांधी की जय
भारत माता की जय
आजादी अमर रहे।
बच्चे – महात्मा गांधी की जय
वन्दे मातरम्,
दादा– पर बच्चो,
आखिर की जरा और सुनो करुण कहानी,
जो बनकर टपकती है सदा आंख का पानी।
बच्चे – आंख का पानी।
दादा– हां बच्चो।
दादा– हां बच्चो!
और एक दिन ऐसी चली निष्ठुर गोली
बापू की–
मृतक देह की निकाली गई डोली।
रघुपति राघव राजाराम
सबको सन्मति दे भगवान
रघुपति राघव राजाराम
पतीत पावन सीताराम,
राम, राम, राम
राम, राम, राम
बच्चे – राम, राम, राम,
राम, राम, राम।
(समाप्त)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

प्रायश्चित

प्रसंग : डॉ.(प्रो.) जमनालाल बायती

गांधी जी व अन्य भाइयों को पिता की जेब से खर्च तो मिलता था, वे सजग भी रहते थे कि जेब खर्च बढ़े भी नहीं मिलने वाले जेब खर्च से ही काम चल जाए। बचत हो या न हो पर खर्च मिलने वाली राशि से अधिक न हो। उनके बड़े भाई से किसी माह में खर्च अधिक हो गया, प्रयत्न करने पर भी ध्यान नहीं रहा, अधिक खर्च हो गया। फलतः भाई पर कर्ज हो गया, कर्ज भी २–४ रुपये नहीं २५ रुपये वह बढ़ गया। सोचो जरा उस समय के २५ रुपये का कर्जा कितना भारी है गांधीजी के भाई ने हाथ में सोने का कड़ा पहन रखा था। दोनों भाईयों ने मिलकर बिना किसी को जानकारी दिये सोने के कड़े में से एक तोला सोना बेचकर कर्ज चुका दिया। कर्जा उतर गया। इससे ऋण मुक्ति मिली। भाई निश्चिंत हो गये थे। पर क्या गांधी जी भी प्रसन्न थे– सहज थे? नहीं, वे इस कार्य से कड़े में से एक तोला सोना बेचने तथा कर्ज चुकाने में शामिल थे– अतः वे बड़े दुखी थे, वह दुःख उनके लिये असह्य हो रहा था, रात भर उन्हें नींद नहीं आई। वे इस कार्य को परिवार के लोगों से सदैव छिपा रखने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। गांधी जी कि शक्ति इस कार्य को छुपाने में असफल हो रही थी। रात–दिन सोते बैठते विद्यालय में घर में गांधी जी उद्विग्न रहने लगे। क्योंकि वे सोचते थे कि वे भी इस कार्य में चोरी से सोना बेचने में शामिल है वे चोरी की पीड़ा सहन नहीं कर पा रहे थे। खूब सोच विचार कर साहस जुटाया कि गलती पिताजी के सामने स्वीकार की जाए। बस फिर क्या था? पिताजी को एक पत्र लिखा जिसमें पूरी घटना का विवरण था सारा दोष ईमानदारी से स्वीकार किया। इतना ही नहीं गलती के लिए सजा का आग्रह किया। इसी पत्र में यह भी स्पष्ट वादा किया कि इस प्रकार की गलती को आगे नहीं दोहरायेंगे। पत्र लिखा पत्र स्वयं लेकर पिताजी के पास गये तथा पिताश्री के पांव छूकर पत्र उनके हाथों में थमा दिया तथा हाथ जोड़कर अपराधी की भांति सिर झुका कर बैठ गये।

पिताजी ने पत्र पढ़ा और उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बह चली पत्र आंसूओं से भींग गया। पिताजी ने आंखें मूंद ली और पत्र को फाड़ दिया। पिताजी दुखी मन से लेट गए। पिताजी के इस व्यवहार को देखकर दुखी मन को देखकर गांधी जी भी बहुत देर तक रोते रहे।

पिताजी के दर्द से उनके आंसुओं से मानो गांधी जी का हृदय छलनी बन गया था।

● भीलवाड़ा (राज.)

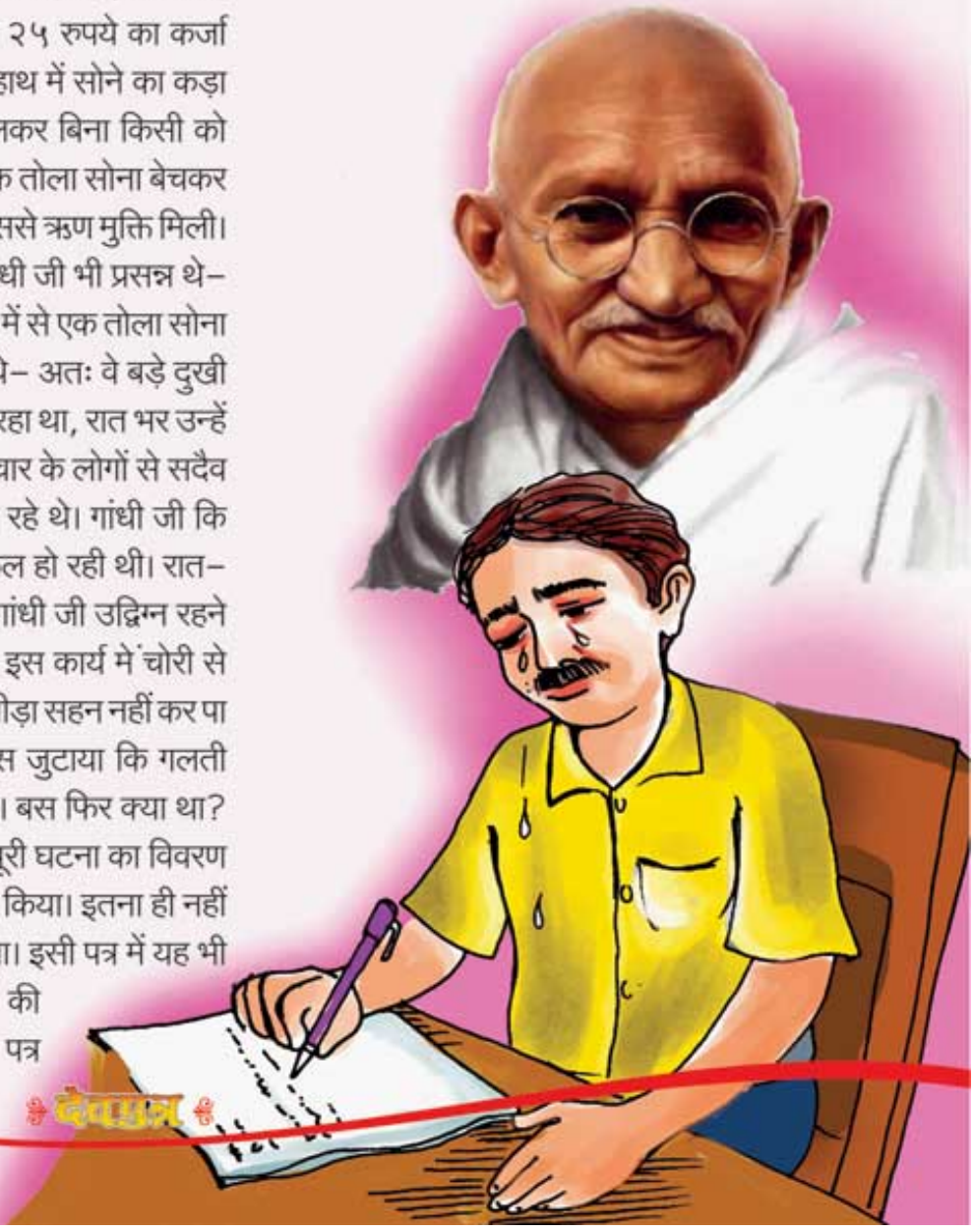

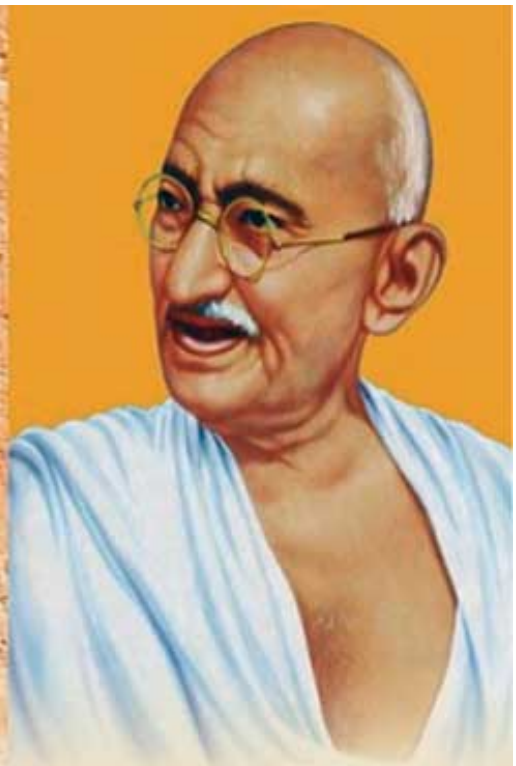

गाँधी जी के तीन गुरु

प्रसंग : मोहन उपाध्याय

दक्षिण अफ्रिका में अपना सत्याग्रह आन्दोलन चलाकर, वहाँ रहने वाले भारतीयों को अपने बहुत से अधिकार दिलाकर गाँधीजी सन् १९१५ में भारत लौट आये और जनता की सेवा में जुट गए।

स्वराज्य के लिए किये जा रहे उनके छोटे बड़े आन्दोलन के कारण उनका नाम चारों और फैलने लगा। इसलिए कई लोग उनसे मिलने उनके आश्रम आने लगे। कभी-कभी कोई सज्जन उन्हें भेंट में कोई वस्तु भी दे जाते। एक बार एक व्यक्ति उनसे मिलने आये तो उन्होंने गाँधीजी को एक चीनी मिट्टी का खिलौना दिया जिसमें तीन बंदर बैठे थे, एक बंदर ने अपना एक एक हाथ दोनों कानों पर, दूसरे ने अपना एक-एक हाथ दोनों आँखों पर और तीसरे ने अपने दोनों हाथ मुँह पर रखे थे।

गाँधीजी से मिलने आने वाले कई लोग आश्चर्य से उन बंदरों को देखते तो गाँधीजी मुस्काकर उनसे कहते- ''ये बंदर नहीं, ये मेरे तीन गुरु हैं, पहला मुझे सिखाता है कि बुरी बातें मत सुनो, दूसरा उपदेश देता है कि बुरे दृश्य मत देखो, तीसरा सीख देता है कि बुरे बोल मत बोलो, अर्थात् सदा अच्छी बातें सुनों, अच्छे दृश्य देखो और अच्छे तथा मधुर बोल बोलो ताकि अपना भी भला और दूसरों का भी भला हो।

● अजमेर (राज.)

(जन्मदिवसः २ अक्टूबर)

अच्छा जैरामजी की

रेखाचित्र : डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

ऊँचा पूरा कद, उच्च ललाट, भारी भरकम गौरवर्ण काया, बड़ी–बड़ी स्निग्ध सरल आँखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा, दिपदिपाता चेहरा, ओठों पर पर हरदम खिली रहने वाली मुस्कान, साफ–स्वच्छ झकाझक ढीला–ढाला कुर्ता– पायजामा और पुस्तकों से भरा बैग हमेशा उनके साथ रहता। उनकी घनी भौहों के बीच मोटी नाक से दम्भ और दुश्चिंताओं का दूर–दूर तक रिश्ता न था। स्वभाव के बेहद विनम्र। छोटे–बड़े सभी को, यहाँ तक कि काम वाली बाई को भी करबद्ध प्रणाम करना स्वभाव में शामिल था जो बरबस ही हर किसी को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता था। बाल साहित्य का कार्यक्रम हो और वे वहां न पहुंचें, असंभव, आरक्षण मिले या न मिले, पर पहुंचना है।

अब तक आप समझ ही गए होंगे, मैं किसका रेखाचित्र खींच रही हूँ– राष्ट्रबंधु। जी हाँ आपने ठीक पहचाना डॉ. श्रीकृष्णचन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु', जिनका जन्मदिवस २ अक्टूबर है जिसे पूरा राष्ट्र मनाता है महात्मा गाँधी, लाल बहादुर शास्त्री जैसे महापुरुषों के साथ। राष्ट्रबंधु ऐसा महापुरुष जिसके चेहरे पर बिखरी हंसी के आलोक में पूरा वातावरण खिल उठता। प्रणाम करता हूँ 'अच्छा जै राम जी की', 'प्रसन्न रहो' 'जो है उसे कहता हूँ' जैसे तकियाकलाम शब्द विन्यास से मन को हर लेने वाले राष्ट्रबंधु जिनका जीवन तपती रेत पर चलकर भी झुलसा नहीं, बल्कि कुंदन सा तपकर निखर गया। वे बतलाते थे, अपने पिता की ग्यारह संतानों के न रहने के बाद वे बारहवीं संतान थे। विकट परिस्थितियों को झेलने के बाद भी उनके ललाट पर कभी क्रोध, आवेग की लकीरें अपनी धाक नहीं जमा सकी। दुःख और विषम परिस्थितियों के कुहासे को चीरकर डाक बाँटते, कोयला ढोते, चाट बेचते और अखबार बेचते–बेचते किताबों से प्रगाढ़ मित्रता ने ना जाने कब बच्चों के बीच इस अवधूत को ईश्वर ने बिठा दिया कि वह बुढ़ापे तक बच्चों जैसा सरल–तरल बना रहा और हँसते–हँसते कहता– ''भाई, मेरे भीतर तो एक बच्चा बैठा है जो कहता रहता है कि खूब खाओ, खूब खेलो। दादा का व्यक्तित्व एक शैलखंड की तरह अडिग इरादों से पूरित था जो कह दिया, करके दिखाया।

पीढ़ियों से बने रहने वाले अंधकार को मिटाने में सूरज को देरी नहीं लगती। 'तपती रेत पर' अपने आत्मकथ्य में वे लिखते हैं कि माँ शाकम्भरी देवी की कृपा से मुझे जो परिवार मिला, उनके नाम भी देवी के नाम पर आधारित हैं, बाबा शारदा प्रसाद तिवारी, पिता देवी प्रसाद तिवारी, माँ भगवती देवी और बाद में पत्नी मिली विद्या देवी, दादा हँसते हुए कहते थे– ''मैं तो विद्यापति हूँ'' स्वभाव से जितने सरल, बाल साहित्य के प्रति दृष्टि उतनी ही गंभीर। वेशभूषा की जितनी सादगी, उतने ही व्यक्तित्व के विराट। कटनी प्रवास के दौरान उस दिन जब बाल साहित्य का आयोजन कटनी में कराने की रूपरेखा तैयार की, उसी संदर्भ में तत्कालीन विधायक से मिलने उनके कार्यालय जैसे ही पहुंचे, उनके विराट व्यक्तित्व को देखकर विधायक महोदय घबराकर उठ खड़े हुए और अनायास ही झुक पड़े उनके चरण स्पर्श करने, ऐसे ही थे राष्ट्रबंधु।

एक बार मैंने कहा– ''दादा यात्राएं कम किया करिये। अब अपना स्वास्थ्य भी देखा करिये।' उनके चेहरे पर

असीम मुस्कुराहट खिल गई। वे बोले– एक फ्री की कहावत है– ''जिस व्यक्ति ने घुमक्कड़ी नहीं की, उस व्यक्ति ने इंसान की कीमत नहीं समझी। न परेशान हो, मुझे कुछ नहीं होगा, यद्यपि एक गुर्दे पर चल रहा हूँ। जिंदगी यात्रा है, इसका भरपूर आनंद उठाता हूँ यात्राए इंसान को ही नहीं, उनके नजरिये को भी बदलती है।'' महात्मा गांधी के लिए सोहनलाल द्विवेदी ने लिखा था ''जो चल पड़ा, वह मंजिल को पा गया, जो ठहर गया वह सड़ गया'' इंसान को यात्राएं करनी चाहिए, कभी अकेले, कभी समूह में। इंसान चलने फिरने, सैर करने के लिए ही बना है, इसीलिए तो उसे ईश्वर ने पैर दिये हैं। दादा की यायावरी से बाल साहित्य का कारवां बनता गया और ऐसे पद चिन्ह बनते चले गए जो इंसानियत का रास्ता दिखलाते हैं। जिस तरह स्वामी विवेकानंद की शिकागो अमेरिका की विश्वधर्म सम्मेलन की यात्रा से हिन्दुस्तान की एक नई छबि पश्चिमी देशों के समक्ष गढ़ी थी, ठीक उसी तरह पटियाला में राष्ट्रबंधु की यायावरी ने अपनी अंतिम यात्रा में बाल साहित्य को एक नई दिशा, नई छवि, स्फूर्ति प्रदान की थी। महान आत्माओं को मृत्यु का पूर्वाभास हो जाता है, तभी तो जाते जाते फोन करके गए थे ''मैं जाता हूँ पटियाला, आप नहीं चल रहीं, यह ठीक नहीं है। कोई बात नहीं, मैं चलता हूँ। अब आपके नाम की मैं वहां जय–जयकार करूँगा। किताबें बाटूंगा, कहूंगा कि सुधा ने पर्व लिखे हैं। अच्छा, जै राम जी की।'' पूर्वाभास के कारण ही तो उन्होंने कहा था–''हम तो चले जाएंगे, बाल साहित्य अब आप लोगों को संभालना है, अब बाल साहित्य समीक्षा कटनी से निकालो।'' पर हमेशा हमने असमर्थता ही बताई। एक ऐसे जीवट इंसान से जो जीवनभर समस्याओं से जूझता संघर्षरत रहा, किन्तु कभी भी असमर्थ नहीं हुआ।

घर की दीवारों को छू लेने वाली हवाओं ने हमेशा यायावरी की प्रेरणा दी। जीवन यात्रा का यह यायावर कभी थका नही। ३ मार्च, २०१५ को पटरियों पर चलती राहें उन्हें खुद बाहों में उठाकर ले चल पड़ीं। गुलजार की पंक्तियाँ मन में उतर आईं– राहों के दीये आँखों में लिये, तू बढ़ता चल ओ राही। दादा ने यात्राओं के दौरान फूल फूल–पात पात, राह राह– घाट घाट, राजमार्ग हो या पगडण्डी सब कहीं इंसानियत को परखा और इंसानियत को जी भर जिया। कहने को यह नहीं रखा कि दो कदम की दूरी पर पत्तों पर ओस थी, उसे न देखा और यात्राएं लम्बी लम्बी की।

दादा माँ दुर्गा के अनन्य भक्त थे। उनकी दिनचर्या की शुरुआत ही दुर्गा सप्तशती के पाठ से होती थी। एक बार बातचीत के दौरान दादा ने कहा– ''क्या मुझे माँ शारदा के दर्शन नहीं कराओगी?'' मैंने कहा– ''कैसी बात करते हैं दादा! आप आ जाइए। हम सब आपके साथ दर्शन करने मैहर चलेंगे। और फिर नियत दिन पर एन सुबह पांच बजे दादा का फोन आया– ''मैं गलती से झुकेही स्टेशन पर उतर गया हूँ, खुले आसमान के नीचे पत्थर पर बैठा हूँ, अब क्या करूँ।'' मेरी कल्पना में उतर आया– ''भोले बाबा कड़कड़ाती ठण्ड में तपस्या में लीन माला जप रहे होंगे। आनन–फानन में जब तक व्यवस्था की उन्हें बुलवाने की, तब तक घर आ गए। दादा ने बतलाया– एक बाइक वाला कटनी आ रहा था मैंने उससे विनती की। उसने मेरा भारी–भरकम बैग उठकार मुझे एक ट्रक में बैठकार मिशन चौक पहुंचा दिया। धन्य हैं ऐसे राष्ट्रबंधु जिनके व्यक्तित्व के आगे सारी परेशानियां नतमस्तक हो जाती थीं। दूसरे दिन मैहर दर्शन को हम सपरिवार रवाना हुए। मैहर पहुंचने पर दादा एक ठेले के सामने रुक गए जहाँ गरम गरम आलूबड़े बन रहे थे। दादा ने खाने की इच्छा व्यक्त की। सभी ने कहा–''भाई माँ के दर्शन के बाद खाएंगे। दादा बोले– ''माँ ने मुझसे कहा है कि बेटा खा–पीकर आओ। इसलिए मैं तो खा पीकर जाऊँगा।''

दादा की प्रेरणा से बाल साहित्य में शोध कार्य करने का मन बना लिया। दादा दिशा देने कटनी पधारे। बहुत मेहनत और प्रफुल्लित मन से उन्होंने संक्षेपिका तैयार करवाई। लगातार तीन दिन दादा का सान्निध्य रहा। मेरे निवास स्थान पर स्थापित महिला एंव बाल कल्याण साहित्य सृजन केन्द्र में प्रति रविवार बच्चे कार्यशाला में उपस्थित होते थे। उसी दौरान बच्चों के आग्रह पर दादा भावविभोर होकर गीत सुनाने लगे। काले मेघा पानी दे....। ऐसा लग जैसे बादलों की झर–झर बरसात से सब भीग रहे हैं। तभी आईस्क्रीम वाले की आवाज आई और दादा ने

आवाज लगाई– ''रुको भाई, आईस्क्रीम खाएंगे। ऐसे बाल सुलभ स्वभाव के थे दादा राष्ट्रबंधु। बच्चों की चौपाल के बीच एक दिन ख्यातिलब्ध साहित्यकार, बाल कवि बैरागी का फोन आया। मैंने उनका अभिवादन किया, कुछ बातचीत हुई। दादा को मैंने बताया–''बाल कवि बैरागी का फोन था, मुझे प्रणाम कर रहे थे, मुझे बहुत संकोच हो रहा था।'' दादा हँसते हुए बोले– ''जब बाल कवि बैरागी सुधा गुप्ता को प्रणाम करता है तो राष्ट्रबंधु किस खेत की मूली है।'' और एक जोरदार ठहाका लगाया। दादा के विराट व्यक्तित्व की छाप से कोई अछूता न रहता था, जो भी प्यार से मिला हम उसी के हो लिए, ऐसे थे राष्ट्रबंधु।

दादा के वैकुण्ठधाम प्रवास के पश्चात मैंने केन्द्र में बच्चों के बीच जब यह समाचार दिया कि दादा नहीं रहे, तब एक बच्ची की आँखें छलक उठी। उसी समय उसने अपनी भावनाओं को अपनी डायरी में कुछ इस तरह व्यक्त किया जिसे पढकर मेरा मन भीग गया।

''मैं हर रविवार अपनी मैडम के यहाँ बाल कल्याण केन्द्र में जाती हूं। राष्ट्रबंधु जी से मैं वहीं पर मिली थी। उन्होंने वहां गीत सुनाया था– काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे। मुझे यह गीत बहुत अच्छा लगा था। अब वे इस दुनिया में नहीं हैं, इस बात का पता मुझे अभी अभी चला है। मैं बहुत दुखी हूँ। भगवान से प्रार्थना करती हूँ , वे जहाँ भी हों, खुश हों।'' राष्ट्रबंधु जी के बारे में एक छोटी सी कविता–

'राष्ट्रबंधु उनका नाम, प्रेम बांटना, दिल बहलाना उनका काम,

दुःख में न रहना, न दुःख देना, हंसना–हँसाना उनका काम

ये स्वभाव था उनका यारों, राष्ट्रबंधु उनका नाम।'

कक्षा सात की यह बच्ची जिसकी डायरी के ये अंश भला किसके मन को न भिगो देंगे। • **कटनी (म.प्र.)**

संस्कृति प्रश्नमाला

- *लंका जाने के लिए सागर पर सेतु बनाने वाले वानर इंजीनियर कौन थे?*
- *कौरव व पाण्डव भ्राताओं को अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा किन्होंने दी?*
- *वियेतनाम की विदेश मंत्री जब कुछ वर्षों पहले भारत आईं तो उन्होंने किस भारतीय महापुरुष की समाधि पर जाने की इच्छा जताई?*
- *तख्त श्री हरिमन्दिर साहिब बिहार के किस नगर में स्थित है?*
- *भारतीय कालगणना के अनुसार नये सौर-वर्ष का प्रारम्भ कब से होता है?*
- *विक्रमादित्य की पदवी धारण करने वाले पहले भारतीय सम्राट कौन थे?*
- *वनस्पति विज्ञान के किस प्राचीन भारतीय ग्रंथ को यूनेस्को ने विश्व धरोहर माना है?*
- *लार्ड हार्डिंग्ज पर बम-प्रहार की योजना में शामिल दिल्ली के प्रसिद्ध व्यवसायी कौन थे?*
- *हल्दीघाटी के युद्ध में मेवाड़ी सेनाओं के हरावल (सबसे आगे) में खड़े होने वाला पठान योद्धा कौन था?*
- *किस प्रांत का एक गाँव योग-गाँव बन गया है?*

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

(२ अक्टूबर : शास्त्री जयंती)

लाल बहादुर

कविता : मधुर गंजमुरादाबादी

सबको प्यारे, लाल बहादुर।
अमर हमारे, लाल बहादुर।।
जिन्हें शास्त्री जी कहते हैं,
हम सबके दिल में रहते हैं।
कोई भूल न सकता उनको,
देश-दुलारे, लाल बहादुर।
बचपन में नन्हे कहलाए,
कदम हमेशा बड़े बढ़ाए।
बापू के शिष्यों में निकले,
सबसे न्यारे, लाल बहादुर।
जय जवान औ, जय किसान का,
नारा सच्चे स्वाभिमान का।
देकर चमके आसमान में,
जगमग तारे, लाल बहादुर।
वह दुर्घटना ताशकन्द की,
जिसने सारी कथा बन्द की।
दुनिया जान न पायी कैसे,
स्वर्ग सिधारे, लाल बहादुर।

• गंजमुरादाबाद (उ.प्र.)

(१ अक्टूबर : रक्तदान दिवस)

मानवता

कहानी : भगवती प्रसाद द्विवेदी

पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल में आज लोगों की भीड़ देखते ही बनती थी। बाहर सड़क के किनारे कार, टैक्सी, स्कूटर, साइकिलों का तांता लगा हुआ था। स्त्री–पुरुष, बच्चे–बूढे सभी अस्पताल की ओर ही भागे जा रहे थे। किसी की आँखों में कौतूहल नाच रहा था, तो किसी के मुरझाये हुए चेहरे पर अनिष्ट की आशंका झलक रही थी। कुछ लोग, जो पहले से ही वहां मौजूद थे, आंखों में आंसू लिये सुबक रहे थे। वातावरण अत्यंत ही कारुणिक हो आया था। अस्पताल के आसपास उदासी के बादल मंडरा रहे थे।

राजीव अपने माँ–पिता के साथ रिक्शे से उतरकर अस्पताल की ओर तेजी से बढ़ रहा था। वह सहमा–सहमा सा दीख रहा था। माँ की आंखें डबडबा आई थीं। वे मन ही मन हनुमान चालीसा का पाठ कर रही थीं। पिताजी के चेहरे पर भी चिंता की रेखायें गहराती जा रही थीं।

राजीव ने अस्पताल में उमड़ती हुई भीड़ की ओर अचरज से देखा, अधिकांश लोगों के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। नये आगंतुक सूचना पट्ट पर चिपकी हुई सूची में अपने–अपने पिता, पुत्र, पत्नी, संबंधी, मित्र आदि के नाम की तलाश कर रहे थे। माँ–पिताजी के साथ राजीव भी उधर ही बढ़ गया।

''कितनी भयंकर दुर्घटना हुई है।'' दुर्घटना लोगों की सूची को देखते ही राजीव के मुंह से निकला। पर उसकी बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

''मगर इतनी बड़ी दुर्घटना हुई कैसे? बगल में खड़ा एक व्यक्ति अपने किसी परिचित से पूछ रहा था। राजीव ने भी उधर ही निगाहें टिका दीं। पूछने वाले व्यक्ति की आंखों में जानकारी हासिल करने की अधीरता तथा आश्चर्य के भाव एक साथ तैर रहे थे।

''आज का समाचार पत्र नहीं देखा आपने? उधर से 'पलामू एक्सप्रेस' पटना आ रही थी और इधर से एक मालगाड़ी उसी पटरी पर जा रही थी। बस दोनों ट्रेनों में भिड़ंत हो गई।'' परिचित व्यक्ति के मुंह खोलने से पहले ही बगल में खड़ा एक दूसरा युवक अपने सामान्य ज्ञान पर गर्व करता हुआ बोल उठा था।

राजीव अभी उधर ही देख रहा था कि पिताजी की भर्रायी हुइ आवाज गूंजी थी, ''अपने रानू का तो सूची में नाम ही नहीं है। अब क्या होगा?

''भाई साहब, इस सूची में तो ज्यादातर उन्हीं लोगों के नाम हैं, जिसका उस रेलगाड़ी में आरक्षण था। वैसे, आप अंदर जाकर घायलों में अपने आदमी की पहचान कर लीजिये।'' पिताजी के प्रश्न पर टिप्पणी करते हुए पीछे से एक व्यक्ति ने सुझाव दिया था।

''हाँ, ठीक कहते हैं आप।'' पिताजी ने कुछ सोचते हुए कहा–''चलो अंदर चलकर देखते हैं।''

बाहर चीख–पुकार मची हुई थी। घायलों को ढोकर लाने वाली एम्बुलेंस (रुग्णवाहिनी) खड़ी थी। कुछ औरतें छाती पीट–पीटकर रो रही थीं। शायद उनके किसी अपने आदमी का देहांत हो गया हो। राजीव की आंखें भर आयीं।

अस्पताल के अंदर दाखिल होते ही राजीव के रोंगटे खड़े हो गए। दुर्घटनाग्रस्त लोगों के मुंह से कराह फूट रही थीं। कई लोग बेहोश पड़े हुये थे। किसी का दायां पैर कटा हुआ था, तो किसी का बायां हाथ। किसी के पेट में लोहे की छड़ धंस गई थी तो किसी का पूरा बदन ही लहूलुहान हो गया था। राजीव एक अनजाने

भय से सिहर उठा।

माँ पिताजी की आंखें हर दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को सूक्ष्मता से देखकर फिर आगे बढ़ जाती थीं। जैसे-जैसे राजीव की नजर घायलों पर पड़ रही थी, उसके हृदय की धड़कन तेज होती जा रही थी। मगर उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि सभी लोग सिर्फ अपने आदमियों के विषय में ही क्यों चिंतित हैं?

माँ तो बार-बार कह उठती थीं, ''दुर्घटना होनी ही थी, तो किसी दूसरे दिन हुई होती या किसी दूसरी रेलगाड़ी से होती। हे भगवान...।''

राजीव को माँ की बात पर मन ही मन गुस्सा आया। विपत्ति भला कहीं सूचना देकर आती है। रानू भैया गर्मी की छुट्टी में एक माह के लिए डालटेनगंज गये हुए थे। नाना जी खुद ही आकर उन्हें साथ लिवा ले गये थे। दो दिनों पूर्व ही तो भैया का पत्र आया था कि वे आज के दिन ''पलामू एक्सप्रेस'' से वापिस लौट आयेंगे। मगर आज ही यह दुर्घटना हो गयी। पता नहीं भैया किस हाल में हों।

अचानक राजीव की नजर एक घायल व्यक्ति पर पड़ी वह बुरी तरह चौंक उठा। उसने माँ को झकझोरते हुए कहा- ''माँ ! देखिये, ये दीनू भी इसी गाड़ी में था।''

''कौन दीनू?'' माँ ने अचरज से सवाल उछाला।

''दीनू! जो मोहल्ले में भीख मांगने आता था। देखिए न उसका बाया पैर, घुटने के नीचे से बिलकुल कटकर अलग हो गया...।'' राजीव ने सहानुभूति जताई।

''क्या बक-बक किये जा रहे हो? चुपचाप रानू को देखते चलो।'' पिताजी ने राजीव की बात को काटते हुए कहा।

राजीव रुआंसा होकर खामोश हो गया। उसने मन ही मन अंदाजा लगाया कि अपने दुःख के आगे शायद दूसरों

का दुःख कोई खास महत्व न रखता हो।

तभी एक बूढ़ा आदमी बदहवास सा दौड़ा हुआ और रो–रोकर गुहार करने लगा, ''भाइयो! मेरे बेटे को बचा लीजिये। उसे खून की सख्त आवश्यकता है, मगर ओ ग्रुप का खून यहां ब्लड बैंक में है ही नहीं। दानियो! मुझ गरीब पर दया कीजिये और अपना खून देकर मेरे इकलौते बेटे की जिंदगी बचा लीजिये, वरना मैं कहीं का नहीं रहूंगा।''

मगर भीड़ ज्यों–की–त्यों अपनी धुन में खोयी हुई थी। उस बूढे की बात पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। कुछ लोगों ने तो पागल कहकर उसकी खिल्ली उड़ायी।

''माँ, मेरा खून तो 'ओ ग्रुप' का ही है न?'' राजीव ने माँ से प्रश्न किया।

''हाँ, है तो मगर बात क्या है?'' माँ ने नाक भौं सिकोड़ते हुये उत्तर में एक और सवाल ठोक दिया।

''सुना नहीं आपने? उस गरीब के इकलौते बेटे को खून की जरूरत है।'' राजीव ने वास्तविकता प्रकट करते हुए कहा।

''मगर उसका बेटा क्या लगता है तुम्हारा? पिताजी ने डपटते हुए पूछा।

''मानवता के नाते उस गरीब की मदद करना ही तो हमारा फर्ज है। आपने ही तो पढ़ाया था कि....''

राजीव पिताजी को समझाने के लहजे में बोलता जा रहा था कि माँ ने बात काटकर गुर्राते हुए जवाब दिया, ''हम अपने बेटे की चिंता में व्याकुल हैं और तुम्हें मानवता की चिंता सता रही हैं? तुम्हें शर्म आनी चाहिए कि उधर तुम्हारा बड़ा भाई कहीं पड़ा–पड़ा कराह रहा होगा और इधर तुम्हें दूसरों की चिंता ही खाये जा रही है।''

''मगर माँ!'' राजीव ने अविचलित भाव से कहा, ''अगर वह लड़का आपका अपना बेटा होता, तो भी क्या आप यही कहतीं? यदि मेरे खून दे देने से उस गरीब की जान बच जाती है, तो इसमें भला हर्ज ही क्या है?''

माँ कुछ देर तक राजीव को घूरती रहीं। उसने बूढ़े की ओर बढ़ते हुए पुकारा, ''बाबा, मैं अपना खून देने के लिए तैयार हूं। चलिये, जल्दी कीजिये।''

बूढ़े की आंखें छलछला आईं। उसने राजीव को गले से लगा लिया और फिर उसे साथ लेकर आगे बढ़ चला।

माँ–पिता एक दूसरे की ओर देखते रह गये। फिर अपने नौकर रामू की आवाज सुनकर उन दोनों की तन्द्रा टूटी। रामू ने अधीरता से कहा– मालकिन, रानू भैया ने टेलीग्राम भेजा है। वह आज न आकर परसों की गाड़ी में आयेंगे।'' उसने राजीव के पिताजी के हाथों में टेलीग्राम थमा दिया।

माँ पिताजी के मन में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। अब वे राजीव के आने की आतुरता से प्रतीक्षा करने लगे।

अचानक वही बूढा आदमी दौड़ा हुआ आया और वह राजीव के पिताजी के पैरों में गिर पड़ा, ''साहब, आपके बेटे ने मेरे बेटे को नयी जिंदगी दी है, मैं आप लोगों का उपकार कभी नहीं भूलूंगा।'' बाबा का मुरझाया हुआ चेहरा खिल उठा था।

''भाई साहब!'' राजीव के पिताजी ने मुस्कराते हुए कहा, ''इसके लिये तो आप मेरे राजू बेटे का धन्यवाद कीजिये। हमलोग तो स्वार्थ में अंधे हो गये थे, लेकिन राजू ने ही हमें आज सही अर्थ में मानवता की सीख दी है।''

तभी डाक्टर सिन्हा, राजीव को साथ लिये आ पहुंचे। राजीव ने ही अपने माता–पिता से उन्हें परिचित कराया। पिताजी का मस्तक गर्व से ऊँचा उठ गया। माँ भी राजीव के माथे पर प्यार से हाथ फेरने लगीं।

● पटना (बिहार)

(दुर्गावती जयंती : ५ अक्टूबर)

महारानी दुर्गावती

आलेख : डॉ. इन्दु राव

महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। महोबा के राठ गांव में १५२४ ई. की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस और शौर्य के कारण इनकी प्रसिद्धि सब और फैल गयी।

उनका विवाह गढ़ मण्डला के प्रतापी राजा संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह से हुआ। ५२ गढ़ तथा ३५००० गांवों वाले गोंड साम्राज्य का क्षेत्रफल ६७५०० वर्गमील था। यद्यपि दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी। फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर राजा संग्राम शाह ने उसे अपनी पुत्रवधु बना लिया।

पर दुर्भाग्यवश विवाह के चार वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती की गोद में तीन वर्षीय नारायण ही था। अतः रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। उन्होंने अनेक मंदिर, मठ, कुएं, बावड़ी तथा धर्मशालाएं बनवाई। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केन्द्र था। उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधारसिंह के नाम पर आधारताल बनवाया।

रानी दुर्गावती का यह सुखी और सम्पन्न राज्य उनके देवर सहित कई लोगों की आंखों में चुभ रहा था। मालवा के मुसलमान शासक बाज बहादुर ने कई बार हमला किया। पर हर बार वह पराजित हुआ। मुगल शासक अबकर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारम्भ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधारसिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा दी। इस पर अकबर ने अपने एक रिश्तेदार आसफ खां के नेतृत्व में सेनाएं भेज दीं। आसफ खां गोंडवाना के उत्तर में कड़ा मानकपुर का सूबेदार था।

एक बार तो आसफ खां पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दुगनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। इस युद्ध में ३ हजार मुगल सैनिक मारे गये। रानी की भी अपार क्षति हुई। रानी उसी दिन अंतिम निर्णय कर लेना चाहती थीं। अतः भागती हुई मुगल सेना का पीछा करते हुए उस दुर्गम क्षेत्र से बाहर निकल गयीं। तब तक रात घिर आयी। वर्षा होने से नाले में पानी भी भर गया।

अगले दिन २४ जून १५६४ को मुगल सेना ने फिर हमला बोला। आज रानी का पक्ष दुर्बल था। अतः रानी ने अपने पुत्र नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। तभी एक तीर उनकी भुजा में लगा। रानी ने उसे निकाल फेंका। दूसरे तीर ने उनकी आंख को भेद दिया। रानी ने इसे भी निकाला पर उसकी नोंक आंख में ही रह गयी। तभी तीसरा तीर उनकी गर्दन में आकर धंस गया।

रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि हव अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे। पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गई। गढ़मंडला की इस जीत से अकबर को प्रचुर धन की प्राप्ति हुई। उसका ढहता हुआ साम्राज्य फिर से जम गया। इस धन को उसने सेना एकत्र कर अगले तीन वर्ष में चित्तौड़ को भी जीता। जबलपुर के पास जहां यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ था वहां रानी की समाधि बनी है। देशप्रेमी वहां जाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

● गुरुग्राम (हरियाणा)

गढ़ आया पर सिंह गया

प्रातः काल का समय। तानाजी के सैनिक शत्रु के प्रमुख ठिकानों पर सन्नद्ध खड़े हैं। निर्देश मिला– ''शत्रु जहां कहीं, जिस हालत में हो उसे वहीं समाप्त कर दो।''

कार्यवाही शुरु हो जाती है। एक–एक करके मुगल सैनिकों के सिर धड़ से अलग होने लगते हैं। कुछ देर तो चुपचाप यह कार्य चलता रहता है। किन्तु बाद में चीखपुकार शुरु हो जाती है। गहरी नींद से मुगल सिपाही जगते हैं तो तलवार लेकर अपने साथियों पर ही पिल पड़ते हैं। अल्लाह तौबा की चीख सुनकर वे रुक जाते हैं– बाद में पता चलता है कि मराठों का हमला हो गया हैं। वे भागे–भागे उदयभानु के अन्तःपुर में पहुंच जाते हैं। फरियादी डर से कांपते हुए केवल इतना कह पाते हैं कि–'म–रा–ठे।'

'मराठा' शब्द सुनते ही उदयभानु का नशा उड़ जाता है। वह तलवार हाथ में लेकर बाहर निकलता है। कहता है– ''मेरे बहादुर सिपाहियो! मुगल सल्तनत का परचम झुकने न पाये। आगे बढ़ो– इन मराठा चोरों का सफाया कर दो। तुम सिपाहियों का कत्ल करो, मैं तानाजी को इस गुस्ताखी का ही मजा चखाता हूँ।''

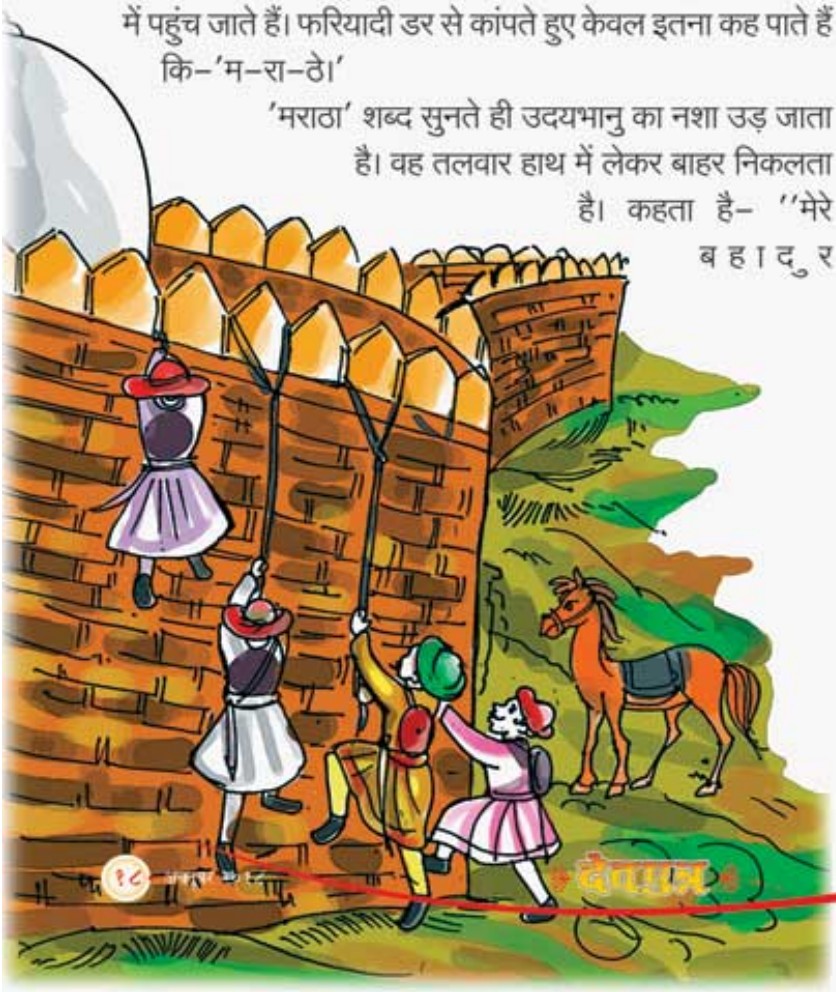

उदयभानु चीखा– 'ता–ना–जी।' तानाजी तो जैसे इसी क्षण का इंतजार ही कर रखा था। वे तो चाहते थे कि उदयभानु का सामना हो जाय तो लड़ाई लम्बी चलने के स्थान पर शीघ्र समाप्त हो जाय। दोनों एक दूसरे की ओर बढ़ते हैं। आमना–सामना होता है। दोनों शेर बब्बर की भांति सीना तानकर खड़े हैं। एक ओर थे देशभक्ति और स्वराज्य के गौरव से गौरवान्वित वीर तानाजी मालसुरे तो दूसरी ओर था मुगलों के टुकड़ों पर पलने वाला उदयभानु।

पहल करते हैं तानाजी। वे तलवार का एक भरपूर वार मारते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश खाली चला जाता है। उदयभानु चिंघाड़ता है– ''तानाजी खबरदार। आसमान के तारे तोड़ने की कोशिश मत कर। ले संभल'' और वह एक बड़ा ही भयानक वार करता है– फिर एक के बाद दूसरा वार बिना दम लिये करता ही जाता है। तानाजी की ढाल उसके प्रत्येक वार को नाकाम कर देती है। किन्तु आखिर ढाल तो ढाल ही ठहरी। उदयभानु अचानक ही बहुत ही क्रुद्ध हो उठता है। यह क्या? इस बार उसने वार किया तो तानाजी की ढाल टूट कर गिर पड़ी। उदयभानु जोश में आकर उछला और साथ ही तानाजी पर एक निर्णायक प्राणघाती वार कर दिया।

किन्तु, वाह रे तानाजी! वीरता और विवेक दोनों को तुम पर गर्व है। तलवार की वार के जवाब में एक सधा हुआ वार। उदर उदयभानु की तलवार तानाजी की गर्दन पर पड़ती है इधर तानाजी की तलवार उदयभानु का सिर धड़ से अलग कर देती है। कैसे

रोमांचक क्षण। यह दोनों वीर रणभूमि में एक साथ ही मृत्यु का वरण करते हैं।

*****

अब युद्ध का नक्शा बदल गया। दोनों ओर के सैनिक अपने सेनापतियों की मृत्यु के समाचार से भयाक्रान्त हो भागने लगे। मुगलों की ओर तो उदयभानु के अतिरिक्त और कोई नहीं था किन्तु मराठों की ओर सेलार मामा एवं सूर्याजी अभी अपनी तलवारों का जंग छुड़ाने में व्यस्त थे। सेलार मामा को तो पता भी नहीं था कि तानाजी उदयभानु को मार कर शहीद हो गये किन्तु सूर्याजी दौड़कर किले की दीवार पर खड़े हो गए। मराठा सैनिकों को ललकार कर बोले– ''खबरदार! भागते कहां हो? हमारा सेनापति स्वराज्य के यज्ञ में प्राणाहुति दे चुका और तुम घर की ओर भाग रहे हो। धिक्कार है तुम्हें। महाराज को क्या मुंह दिखाओगे? चलो। वापस चलो। विजय निश्चित है– हम गढ़ जीत कर ही वापस चलेंगे अन्यथा अपने सेनापति की राह पर चलकर बलिदान हो जायेंगे।'' सूर्याजी ने ललकारा बोलो– ''हर हर महादेव।''

स्वर में स्वर तो मिला किन्तु रक्त में उबाल नहीं आया। इसी बीच सेलार मामा अपनी रक्त रंजित तलवार लिये सूर्या जी और सैनिकों के बीच में आकर खड़े हो जाते हैं। एक गंभीर सिंह– गर्जना के साथ पूछते हैं– ''बोलो। तुम सब क्या चाहते हो? कायरों और गीदड़ों की मौत या स्वराज्य के लिए बलिदान होकर युद्ध के धारातीर्थ में स्नान कर सूर्यलोक को प्रस्थान। जिन रस्सों के सहारे तुम लोग इस गढ़ पर चढ़े थे उन सभी को मैंने काट दिया है। अब दोनों और मृत्यु ही मृत्यु है–या तो किले से कूदकर प्राण दे दो अथवा शत्रु को मारकर मृत्यु का वरण करो। अपमान और पराजय बोलो– क्या चाहते हो? समय बहुत कम है?''

अब तो मराठा वीरों के पास हाँ या ना कहने के लिए भी समय नहीं था। हर हर महादेव का गगनभेदी स्वर गूँजा और मुगलों के सर पर मौत मंडराने लगी। हताश मुगल सिपाहियों को उत्साह कौन दिलाता? केवल रोटी के लिए इंसान कब तक लड़े। उन्होंने सोचा कि जब मर ही जायेंगे तो फिर मौज पानी कौन करेगा? एक ही सवाल सभी की जबान पर था– आखिर हम अपनी जान क्यों दे? और मुगल सिपाहियों ने हथियार डाल दिया।

शिवाजी राजगढ़ दुर्ग पर खड़े विजय के समाचार की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उधर पौ फटी इधर विजय की तुरही बज उठी। बोले– माँ, तानाजी ने कोंडाणा जीत लिया।'' माता जीजाबाई विह्वल हो उठीं। देखा सचमुच कोंडाणा स्वराज्य के अधिकार में था।

संदेशवाहक दूत बोला– ''महाराज कोंडाणा से संदेश लाया हूं...।'' इतना कहकर वह चुप हो गया तो शिवाजी बैचेन होकर बोले– ''क्या संदेश है भाई बोलो न। ''महाराज वहीं चले– ''कह कर उसने सिर झुका दिया।

उषा की लाली क्षितिज पर पूरी तरह फैल चुकी है। शिवाजी कोंडाणा के किले में मुख्यद्वार से प्रवेश करते हैं। सूर्याजी, सेलार मामा और बचे खुचे सैनिक शोकाकुल खड़े हैं। पहुंचते ही शिवाजी पूछते हैं– ''ताना जी कहां है?''

इस सवाल का जवाब कौन दे? केसरिया वस्त्रों में ढंके एक शव की ओर शेलार मामा संकेत करते हैं। शिवाजी आगे बढ़कर वस्त्र हटाते हैं तो तानाजी का क्षत–विक्षत शरीर देखकर बिलख उठते है– ''गढ़ आला पण सिंह गेला'' (गढ़ तो आया पर सिंह गया) बड़ी देर तक वे मौन नतमस्तक वहीं खड़े रहते हैं। और फिर जयघोष के साथ उस सिंह सपूत की शवयात्रा किले के मुख्य द्वार से होकर निकलती है। शिवाजी कोंडाणा को सिंहगढ़ के नाम से गौरवान्वित करते हैं। किन्तु रायबा के विवाह की मुहूर्त का क्या हुआ? इतिहास इस सवाल के जवाब में मौन है। परन्तु सिंहगढ़ से आने वाला हवा का हर झोंका सभी के कानों में सहसा सन्न से कह जाता है कि जिसने मौत से ब्याह रचा लिया, जिन्दगी की दुल्हन सदा उसके साथ ही रहती है। रायबा स्वराज्य का सिपाही था, बलिदान की वेदी पर जिसके पिता ने विजय का वरण किया है वह भी मौत स्फुलिंग बन गया। ब्याह तो रायबा का हुआ अवश्य किन्तु किसके साथ? इस सवाल का जवाब इतिहास की थाती, स्वराज्य का संदेश और जिन्दगी का श्रृंगार है। सिंहगढ़ आज भी तानाजी की स्मृति में मस्तक उठाये तना हुआ खड़ा है– उषा प्रतिदिन उसको स्वयं तिलक लगाती है और स्वराज्य के संरक्षण हेतु स्वदेशवासियों का आह्वान करती है कि और जूझो, जीतो और जिओ।

(शेष कथा अगले अंक में।)

(दुर्गा पूजा पर विशेष)

राणी रासमणि

कहानी : शिवचरण मंत्री

भारत भूमि वीरों, संतों, शूरों की भूमि रही है। यह मीरा सी भक्त, दुर्गा सी वीर और लक्ष्मी रानी सी वीरांगनाएं हुई हैं। इसी प्रकार एक संत हुई बंगाल में। इस भक्त और शक्ति प्रवर नारी का नाम था राणी रासमणि। राणी रासमणि के जगतपावनी माँ दुर्गा के दक्षिणेश्वर मंदिर के सामान्य से पूजारी गदाधर कालान्तर में रामकृष्ण परमहंस के नाम से विश्व विख्यात हुए। परमहंस के प्रमुख शिष्य थे स्वामी विवेकानंद।

राणी का जन्म गंगा नदी के तट पर बसे कोना (बंगाल) गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम हरेकृष्ण दास था जो एक साधारण किसान थे। उनके पास बहुत ही थोड़ी भूमि थी। इससे उनकी आमदानी बहुत कम थी। परिवार का खर्च चलाने के लिए वे खेती के सिवाय राज का भी काम करते थे। बालिका मणि अपने पिता के कार्यों में यथा योग्य हाथ बंटाती। रासमणि बाल्यकाल से ही भगवान की भक्त थी। वह अपनी शक्ति अनुसार बाल्यकाल में ही गरीबों, अनाथों, रोगियों व जरूरतमंदों की सहायता करती। रात के समय पिता हरेकृष्ण आस-पास के लोगों को एकत्रित करके रामायण, भागवत आदि की कथा करते तो बालिका कथा सुनते-सुनते आनंदमग्न हो जाती। पिता ने बालिका को घर पर पढ़ाया और इसीलिए बालिका ने बचपन में ही पढ़ना लिखना शुरु कर दिया।

बचपन में माँ के निधन के पश्चात् भुआ ने बालिका को पाला-पोसा। रासमणि का विवाह मात्र ग्यारह वर्ष की आयु में प्रीतमबाबू के पुत्र रामचन्द के साथ कर दिया गया। प्रीतम बाबू बंगाल के जाने माने जागीदार थे। गरीब सामान्य किसान के घर में जन्मी और बड़ी हुई बालिका विवाह पश्चात् विपुल सम्पत्ति की स्वामिनी बन कर भी अहंकार से कोसों दूर रही। वह सादगी से रहती और दीन दुखियों, गरीबों अनाथों, जरूरत मंदों आदि की सहायता करती।

१८२३ में बंगाल में भयंकर बाढ़ आई। बाढ़ से लोग बेघर हो गए। राणी ने इस समय जगह-जगह अन्नक्षेत्र खोले, आश्रय स्थल बनावाए। राणी के इन कामों से पीड़ितों को बड़ी राहत मिली।

राणी का समय अच्छी बीत रहा था। कि यकायक उसके पति की हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हो गई, दुखों का पहाड़ टूटने पर भी राणी ने धैर्य से इसको सहन किया। राणी की मात्र चार बेटियां ही थीं पुत्र नहीं था। दूसरी ओर विपुल सम्पत्ति की देखभाल भी करना आवश्यक था। वह अकेली सारा काम काज देखने में असमर्थ थी। अतः उसने अपनी सहायता के लिए अपने दामाद मथुरानाथ को साथ ले लिया। दामाद ने जागीर का काम संभाल लिया, पर राणी भगवान की पूजा पाठ आदि नित्य कार्यों के बाद पूरे समय कार्यालय में बैठती, कार्यालय के प्रत्येक काम को सावधानी से देखती। परिणामतः उसकी आमदानी में काफी वृद्धि हुई।

अपनी आय को राणी जनहित के कार्यों में व्यय करने में अग्रणी थी। उसने उस समय में भगवान जगन्नाथ का चांदी का रथ बनवाया। रथ देश के ही कारीगरों से बनवाया गया। इस रथ में उसने लगभग सवा लाख रुपया खर्च किया। राणी सामान्य तथा दुर्गापूजा, लक्ष्मीपूजा, कार्तिक पूजा आदि अवसरों पर मुक्त हाथ से गरीबों, अनाथों, असमर्थों को अन्न-वस्त्र आदि देती रहती थी।

एक बार दुर्गा पूजा के अवसर पर ढोल-नगाड़ों की आवाज से विकल होकर कुछ अंग्रेजों ने राणी पर मुकदमा चलाया। मुकदमे में जज ने पक्षपात किया। राणी पर जुर्माना हुआ। राणी ने जुर्माना दिया। पर उसने बड़ी चतुराई से दुर्गापूजा हेतु जाने वाले मार्ग को गौरी सरकार से खरीद लिया और उससे गौरी सरकार के लोगों का आवगामन बंद कर दिया। अब सरकार घबराई। उसे राणी से समझौता

करना पड़ा। राणी का जुर्माना बिना शर्त माफ कर दिया गया और प्राप्त रकम लौटा दी। गरीब मछुआरों को तंग करने के लिए गौरी सरकार ने समुद्र के मछली बहुल क्षेत्र से मछली पकड़ने पर कर लगा दिया। मछुआरे राणी के पास आए। राणी गरीब मछुआरों का साथ दिया। उसने समुद्र का मछली बहुल क्षेत्र दस हजार में खरीद लिया। इस क्षेत्र को खरीदकर राणी ने इसकी चारों ओर से तारबंदी करवा दी। इससे अंग्रेज सरकार की बड़ी नावों व जहाजों के आवागमन में बाधा होने लगी। मछुआरों को राणी ने मछलियां पकड़ने की छूट दे दी। सरकार को राणी से समझौता करना पड़ा। उनको उसकी राशि मय खर्च के लौटाई गई और मछुआरों को भविष्य में बिना कर के मछली पकड़ने की छूट दे दी गई।

एक बार कुछ अंग्रेज शराब पीकर राणी के महल में घुस गए। महल में उन्होंने भारी उत्पात मचाना शुरु किया। राणी ने इस समय तलवार हाथ में ली और महल में बने रघुनाथ मंदिर का पहरा देने लगी। साक्षात् चण्डी का रूप देखकर अंग्रेज शराबी भाग गए। राणी ने इन बदमाशों पर मुकदमा चलाया। अपराधियों को दण्डित करवाया और महल में हुए नुकसान का मुआवजा वसूल किया।

राणी बड़ी भक्त थी। उसे काशी विश्वनाथ के दर्शन करने की इच्छा हुई। विश्वनाथ के दर्शनार्थ उसने जल मार्ग से यात्रा करने का निश्चय किया। यात्रा की तैयारी हेतु उसने पच्चीस विशाल नावें तैयार करवाई। सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकी थी कि एक रात्रि उसे माँ दुर्गा जिन्हें वे भवतारणी कहती थी, स्वप्न में आदेश दिया कि बेटी तुम काशी मत जाओ। मेरी मूर्ति यहीं स्थापित करवाओ। मैं साक्षात् प्रगट होकर तुम्हारी पूजा स्वीकार करूंगी। माँ का आदेश पाकर राणी ने अपनी काशी यात्रा स्थगित कर दी और कोलकाता में माँ का भव्य मंदिर बनाने का दृढ़ निश्चय किया। यात्रा हेतु तय की गई राशि से रासमणि ने कोलकाता में दक्षिणेश्वर की पच्चीस एकड़ भूमि जगततारिणी माँ काली के मंदिर निर्माण हेतु क्रय कर ली।

माँ का मंदिर बनाने के लिए सन् १८४७ में भूमि पूजन कार्य सम्पन्न हुआ। विशाल एवं भव्य मंदिर निर्माण में आठ वर्ष बीत गए। दक्षिणेश्वर में माँ काली के मंदिर के सिवाय बारह शिवालय एवं एक राधाकान्त मंदिर का निर्माण हुआ। इस सारे निर्माण कार्य में राणी ने सात लाख रुपया उस समय खर्च किया था। मंदिर निर्माण के उपरान्त मंदिर के प्रतिदिन के खर्च के लिए राणी ने शालवाड़ी परगना की जागीर खरीद कर मंदिर को भेंट कर दी। माँ दुर्गा की मूर्ति का काम दक्षिणेश्वर में ही राणी की देखरेख में पूरा हो चुका था किन्तु मंदिर निर्माण कार्य पूरा न होने से मूर्ति स्थापना सम्भव नहीं थी। अतः मूर्ति का किसी प्रकार अपमान न हो उसे एक विशाल बक्से में रखवा दिया गया। राणी को माँ ने स्वप्न में आदेश दिया–''बेटी, बक्से में मेरा दम घुट रहा है, मुझे तू बाहर निकाल ले।'' राणी को माँ की बात सुनकर बड़ा दुःख हुआ। प्रातकालः उसने बक्सा खोलकर देखा तो राणी यह देखकर भाव विभोर हो गई कि मूर्ति पसीने से भीगी हुई है।

अन्ततः मंदिर निर्माण कार्य पूरा हुआ और ३१ मई, १८५५ को दक्षिणेश्वर मंदिर में माँ दुर्गा की मूर्ति की प्राण

प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। पूजा के लिए रामकुमार चटर्जी को रखा गया। माँ की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में देश के सभी विद्वानों, पंडितों और धर्माचार्यों को आमंत्रित किया गया था। रामकुमार चटर्जी बड़ी तन्मयता से पूजा करते थे। पर वे बूढ़े थे अतः उन्होंने अपनी सहायता के लिए अपने छोटे भाई गदाधर को दक्षिणेश्वर में बुला लिया। माँ काली, भवतारिणी के मंदिर में विधि विधान से पूजा अर्चना होने से मंदिर में भक्तों की भीड़ रहने लगी। राणी आकर भक्त मण्डली देख आनंदातिरेक में विभोर जाती। बूढ़े पुजारी रामकुमार की मृत्यु के पश्चात् गदाधर पूजा अर्चना कार्य करने लगे। गदाधर बड़े मनोयोग से माँ की पूजा करते थे। वे मूर्ति में साक्षात् माँ के दर्शन करते और उनसे बाते किया करते थे। माँ से साक्षात् बातें करते गदाधर कभी मस्ती में झूमकर गाने लगते तो कभी ठहाका लगा हंसते और कभी फूट-फूट कर रोने लगते। गदाधर के ये कार्यकलाप राणी के कानों में पड़े। एक दिन जब दर्शन करने आई तो गदाधर को माँ से बातें करते देख ठगी सी रह गई। माँ ने राणी को स्वप्न में कहा- ''साक्षात् प्रगट होकर तेरी पूजा स्वीकार करती हूं। तू छोटे पण्डित पर विश्वास रख।'' अतः माँ के आदेशानुसार राणी ने मंदिर के सभी लोगों को छोटे पुजारी के क्रिया कलापों में बाधा डालने से मना कर दिया।

एक बार एक आसाधारण घटना घटित हुई। राणी माँ की पूजा हेतु मंदिर में आई। गदाधर उर्फ रामकृष्ण देव भी इस समय तन्मय होकर पूजा कर रहे थे। राणी आंखें मूंदकर माँ की स्तुति कर रही थी कि देव ने राणी के गाल पर एक थप्पड़ जड़ दिया और बड़बड़ाए- ''माँ की पूजा के समय में भी सांसारिक बातों का चिन्तन।'' मंदिर में उपस्थित नौकर-चाकर यह देख स्तब्ध रह गए। राणी मौन रही। तुरन्त घर आई। घटना पर विचार किया। भक्ति और शक्ति की प्रतीक राणी ने मन में विचार किया कि मैंने माँ की स्तुति तन्मयता से नहीं की। माँ की प्रार्थना के समय मेरा मन चंचल था। अतः पुजारी ने मुझे सही मार्ग पर न चलने का जो दण्ड दिया वह उचित है। अब राणी रामकृष्ण देव को सच्चा भक्त मानने लगी और उनकी प्राण पण से

सेवा करने लगी।

उपर्युक्त घटना के पश्चात रासमणि अब प्रायः माँ की पूजा अर्चना में व्यस्त रहने लगी। जीवन संध्या समीप जानकर उन्होंने अपनी दीवाजपुर की व्यक्तिगत जागीर माँ के मंदिर में दे दी।

राणी रासमणि को अपने अंतिम समय का पूर्व आभास हो गया था। अतः उन्होंने अपने नौकरों को गंगा के घाट पर रोशनी करने का आदेश दिया। आदेशानुसार घाट रोशनी से जगमगाने लगा। १९ फरवरी, १८९१ का दिन था। राणी घाट की रोशनी देखकर बुदबुदाई - ''घाट के जलते दीपों की रोशनी तो कृत्रिम है। वास्तविक प्रकाशपुंज तो माँ भक्तारिणी ही है। लो वह आई और मैं...।'' कहते कहते राणी वहीं लुढ़क गई। सभी यह देख चकित रह गए। प्रकाश में प्रकाश लीन हो गया।

राणी रासमणि का भक्तिमय और शक्ति प्रेरक जीवन समस्त नारी जाति के लिए विपुल सम्पत्ति और ऐश्वर्यमय भोगों के मध्य कमल सा निर्मल रह कर जीने की प्रेरणा देता है। राणी एक ओर जहाँ उच्च कोटि की भक्त थी वहीं वह गरीबों, अनाथों, दीनदुखियों व बेसहारो के लिए देवी रूप थी। ऐसी देवी को सादर नमन।

● **किशनगढ़ (राज.)**

रावण चलो जलाएं हम

कविता : राजनारायण चौधरी

रावण चलो जलाएँ हम।
राह चला धोखा-अनीति की
उसको सबक सिखाएँ हम!
था घमंड जिसको निज बल का
लिया सहारा जिसने छल का
नाम न ले कोई उस खल का
पाठ यही दुहराएं हम
बुद्धि और संपति से क्या हो?
यदि न किसी में मानवता हो?
होता नाश सदा वैसों का
यह सबको बतलाएँ हम।
ताकत काम न आती हरदम
है विवेक तो फिर क्या है गम?
हो न धर्म से विमुख मनुज
हालात वही कुछ लाएँ हम!
रावण चलो जलाएँ हम

● हाजीपुर (बिहार)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (१५)

कथासत्र–१४

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

फिर आया रविवार। शाम को कथा सत्र प्रारंभ हो गया। मनोरमा ने दादा से पूछा ''शंकरदेव ने कितने ग्रंथों की रचना की थी?''

दादाजी – सुनो! शंकरदेव का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण और चुनौतीपूर्ण भी रहा था। विशेष रूप से कर्मकाण्डी ब्राह्मणों का विरोध तथा प्रशासन का उत्पीड़नों से वे जर्जर थे। परन्तु आखिरी जीवन काल उनका बहुत सुखकर रहा था जिसके कारण निश्चिन्त होकर अपना काम कर पाए थे। उनके साहित्य का मूलाधार था प्राचीन भारतीय वाङ्मय याने प्राचीन भारतीय ग्रंथ वेदों से लेकर पुराणों तक।

उनकी सर्वप्रथम रचना चीह्ण यात्रा तो थी, पर वह रचना अभी तक प्राप्त नहीं हुई, जिसके कारण हरिश्चंद्र उपाख्यान काव्य को ही प्रथम रचना मानी जाती है। उन्होंने साहित्य के सभी विधाओं को संबद्ध बनाने का प्रयास किया गया था। आप संस्कृत के भी बहुत बड़े विद्वान थे और संस्कृत में भी लिखते थे। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं–

काव्य – हरिश्चंद्र उपाख्यान, रुक्मिणी हरण, बलिचलन, अमृत मंथन, अजामिल उपाख्यान और कुरुक्षेत्र।

भक्ति काव्य– भक्ति प्रदीप, भक्ति रत्नाकर (संस्कृत भाषा में) निमिनवसिद्ध संवाद और अनादि–पातन।

संस्कृत से अनुवाद– श्रीमद्भागवत के प्रथम स्कंध, द्वितीय स्कंध, दशम स्कंध, एकादश स्कंध, द्वादश स्कंश और उत्तरकाण्ड रामायण।

अंकिया नाट या नाटक– पत्नी प्रसाद, कालिय दमन, केलिगोपाल, रुक्मिणी हरण, परिजात हरण और राम विजय।

गीत– बड़गीत, भटिमा, छपय।

नाम प्रसंग– कीर्तन घोषा, गुणमाला

शंकर– दादाजी! शंकरदेव ने इतना काम कैसे किया था। उनको कितना कष्ट झेलना पड़ा, इधर से उधर दौड़ना पड़ा। इतने में भी इतना काम? कैसे किया?

दादाजी – तुमने उचित प्रश्न उठाया। देखो मनुष्य की प्रगति के लिए मनोबल प्रबल होना चाहिए। ध्येय सुदृढ़ हो जाय तो सभी बाधाएँ अपने आप दूर हो जाती हैं। श्रद्धा, भगवद् विश्वास और आत्मबल प्रगति का मूलाधार है।

माधव– नानाजी! श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित ग्रंथों में कौनसा ग्रंथ श्रेष्ठ है?

दादाजी– बताता हूँ, श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित ग्रंथों में कीर्तन घोषा सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय है। हमारे उत्तर भारत में गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस जिस प्रकार घर–घर में रखा जाता है, पढ़ा जाता है उसी प्रकार कीर्तन घोषा भी आज के असम में हर परिवार में रखा जाता है।

मनोरमा – अच्छा दादाजी उसके पश्चात श्रीशंकरदेव ने क्या किया?

दादाजी– उसके बाद महाराज नरनारायण उनके प्रति अत्यधिक आकर्षित होने लगे। श्रीमंत शंकरदेव से शरण (दीक्षा) लेने का आग्रह करने लगे। उधर महाराज नरनारायण के राजसभा में भगवद्भक्ति की कथा का इतना आकर्षण होने लगा कि महाराज की इच्छा तीव्र से भी तीव्रतर होने लगी और शंकरदेव को बार–बार अनुरोध करते रहे। आखिर श्रीमंत शंकरदेव को महाराज की प्रार्थना टालना संभव नहीं हो गया। क्योंकि एक दिन महाराज ने हाथ जोड़कर विनम्र भाव से कहा– ''बाप!

(पिता) मैंने तनमन एवं वचन से संकल्प लिया है कि आपका ही शिष्य बनूँगा। कृपापूर्वक मुझे ठुकरा न दें। आपका शिष्य बनने के लिए मैं आतुर हूँ। आप मुझ पर कृपा करें।''

राजा की इच्छा और प्रार्थना सुनकर श्रीमंत शंकरदेव किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। मन ही मन सोचा अब क्या किया जाए? आपकी इच्छा प्रबल हो गई है। कल आप उपवास रखकर व्रत पालन करें। यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो परसों शरण (दीक्षा) दी जायेगी। परंतु सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। कार्य सफल और विफल करने वाले एकमात्र ईश्वर ही हैं। यदि ईश्वर की इच्छा होगी तो परसों कार्य सिद्ध हो जाएगा। आज मुझे जाने दीजिए। महाराज से विदा लेकर आप मधुपुर सत्र में गए।

कोचिबिहार में तत्क्षण प्रचरित हो गया कि महाराज नरनारायण श्रीमंत शंकरदेव से शरण ग्रहण करेंगे। यह समाचार सुनकर छोटे राजा चिलाराय और उनकी पत्नी भुवनेश्वरी के हर्ष की सीमा न रही। क्योंकि उनके गुरुदेव अब कोचबिहार के राजगुरु का सम्मान प्राप्त होगा।

दूसरे दिन महाराज ने व्रतोपवास पालन कर सुन्दर नामघर निर्माण किया, जिसमें बैठकर शरण ग्रहण करने की व्यवस्था रखी। तीसरे दिन शौच–स्नानादि कर महाराज गुरुदेव को लाने हेतु पालकी सहित दूतों को भेज दिया। ठीक उसी समय श्रीमंत शंकरदेव के हाथ के अंगूठे में एक फोड़ा हुआ। आप दर्द से कराहने लगे। इतने में राजदूत ने आकर गुरुदेव को प्रणाम किया और राजा का निवेदन सुनाया। गुरु ने दूतों से कहा– मैं फोड़े के दर्द से बहुत कष्ट पा रहा हूँ। किसी प्रकार मुझे वहाँ जाना संभव नहीं होगा। तुम लोग वापस जाओ महाराज को सूचित कर दो। दूत वापस राजधानी चले गए।

दूत वापस जाने के बाद गुरुदेव ने सोचा कि अपना संकल्प छोड़ने के बजाय इस पृथ्वी से चले जाना ही उचित होगा। बस कमंडल से जल लेकर आचमन किया और टैपर नामक वृक्ष के नीचे पूर्व दिशा की तरफ सिर रखकर सो गए। अपने शिष्यगण चारों तरफ घेरकर हरिनाम कीर्तन करने लगे। इतने में राजधानी में फिर दूत आए। गुरुदेव के पुत्र रामानंद ने पितृदेव के चरण पकड़ते हुए रो रोकर कहने लगे– ''पितृदेव! मुझे कुछ भी नहीं मिला।''

पुत्र की बात सुनकर गुरुदेव ने कहा– ''पुत्र! मेरा जो कुछ है सब तुम्हारी माँ के पास है, यहाँ जो कुछ मिला तुम्हारे पास है।''

रामानंद– ''पितृदेव! मैं इस लोक की सम्पति की बात नहीं कर रहा हूं। परलोक के लिए मुझे कुछ भी नहीं मिला, उस धन की बात कर रहा हूं।'' पुत्र की व्यथा सुनकर गुरूदेव अत्यंत प्रसन्न हो गए। पुत्र को आशीर्वाद देकर कहा– ''तुम धन्य हो और आज मैं भी धन्य हो गया हूँ, आज मुझे अपार हर्ष हो रहा है। आज तक मैंने सोचा था कि तुम मेरे सांसारिक संबंध का ही पुत्र है। आज ही तुम्हारे साथ मेरा पिता–पुत्र का संपर्क हुआ। परन्तु अब मेरा शरीर विफल हो रहा है। तुम इस बित्त के लिए खेद न करो। बढ़ार पो माधव मेरा अभिन्न अंग है। उनको गुरु मानकर सबकुछ प्राप्त कर लो।''

धीरे–धीरे आप विकल होने लगे। शिष्यों को कुछ उपदेश दिए और जोर–जोर से भगवान का नाम उच्चारण करने लगे। इस प्रकार १४९० शकाब्द याने सन् १५६८ ई. के भाद्र महीने के शुक्ला द्वितीया तिथि में दिन के डेढ़ प्रहर के समय में एक सौ उन्नीस वर्ष की आयु में श्रीमंत शंकरदेव वैकुण्ठ प्रयाण कर गए।

गुरुदेव की आकस्मिक मुक्ति देखकर सेवक–शिष्यगण हाहाकार कर रोने लगे।

मनोरमा– ''दादाजी! उसके बाद राजा ने क्या किया?''

दादाजी–''धीरज रखो, कह रहा हूँ। महाराज नरनारायण और चिलाराय भी यह समाचार सुनकर व्यथित हो गए। महाराज नरनारायण ने क्रन्दन करते हुए

कहा– ''हाय, मैं कितना अनाचारी हूँ, गुरुदेव मुझे शरण दिए बना चले गए। यदि शरण के लिए मैं हठ नहीं करता तो वे और कितने दिन हमारे साथ रहते।''महाराज का भाई चिलाराय गुरुदेव के सत्र मधुपुर पहुँचे और नश्वर शरीर के चरण पकड़ कर बिलख–बिलख कर रोने लगे। आखिर राजकीय सम्मान सहित काकतकुटा नदी के तट पर चंदन अगर काष्ठ से निर्मित चिता पर चढाया गया। पुत्र रामानंद ने मुखाग्नि दी। बस कामरूप के एक उज्ज्वल नक्षत्र का अस्त हो गया।

शंकरदेव अनेक गुणों के अधिकारी थे। आपकी तरह बहुगुणी संसार से बिरला है। श्रीमंत शंकरदेव के महान गुणों को परख कर हिन्दी साहित्य संसार की महान विभूति आचार्य वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा –

There are poets and composer, there are saints and retigious teachers, there are musical masters, there are preachers but Sankardeva was genious in whom all there qualities were rolled into one.

तीनों एक साथ– सचमुच श्रीमंत शकरदेव जिनियस (महाप्रज्ञ) थे।

माधव– नानाजी! श्रीमंत शंकरदेव के अभिन्न अंग **माधव** कौन थे?

दादाजी– बताऊंगा, परन्तु आज समय हो गया, राम राम...

तीनों– राम...राम...

● ब्रह्मसत्र तैतलिया (असम)

ढूँढो तो जानें

● राजेश गुजर

नीचे बने चित्रों में ६ जीवों के सिर व धड़ अलग हैं, आप बताएँ सिर किसका और धड़ किसका है?

|| हमारे राज्य वृक्ष ||

त्रिपुरा का राज्यवृक्ष : अगर

डॉ. परशुराम शुक्ल

बहुत कीमती वृक्ष अनोखा,
नेफा में मिल जाता।
चीन और भूटान आदि से,
इसका गहरा नाता।
हरा भरा रहता जीवन भर,
सौ फुट ऊँचा जाता।
गरुड समान रूप के कारण,
ईगल वुड कहलाता।
छाल तने की कागज जैसी,
इसकी अलग कहानी।
भोज पत्र सा इस पर लिखते,
धर्म ग्रंथ कुछ ज्ञानी।
कवक आक्रमण कर लकड़ी पर,
इसका भाव बढ़ाता।
सात लाख का एक किलो यह,
मुश्किल से मिल पाता।
और अंग भी उपयोगी हैं,
औषधि खूब बनाते।
पेट दर्द से बदन दर्द तक,
पल में दूर भगाते।

• भोपाल (म.प्र.)

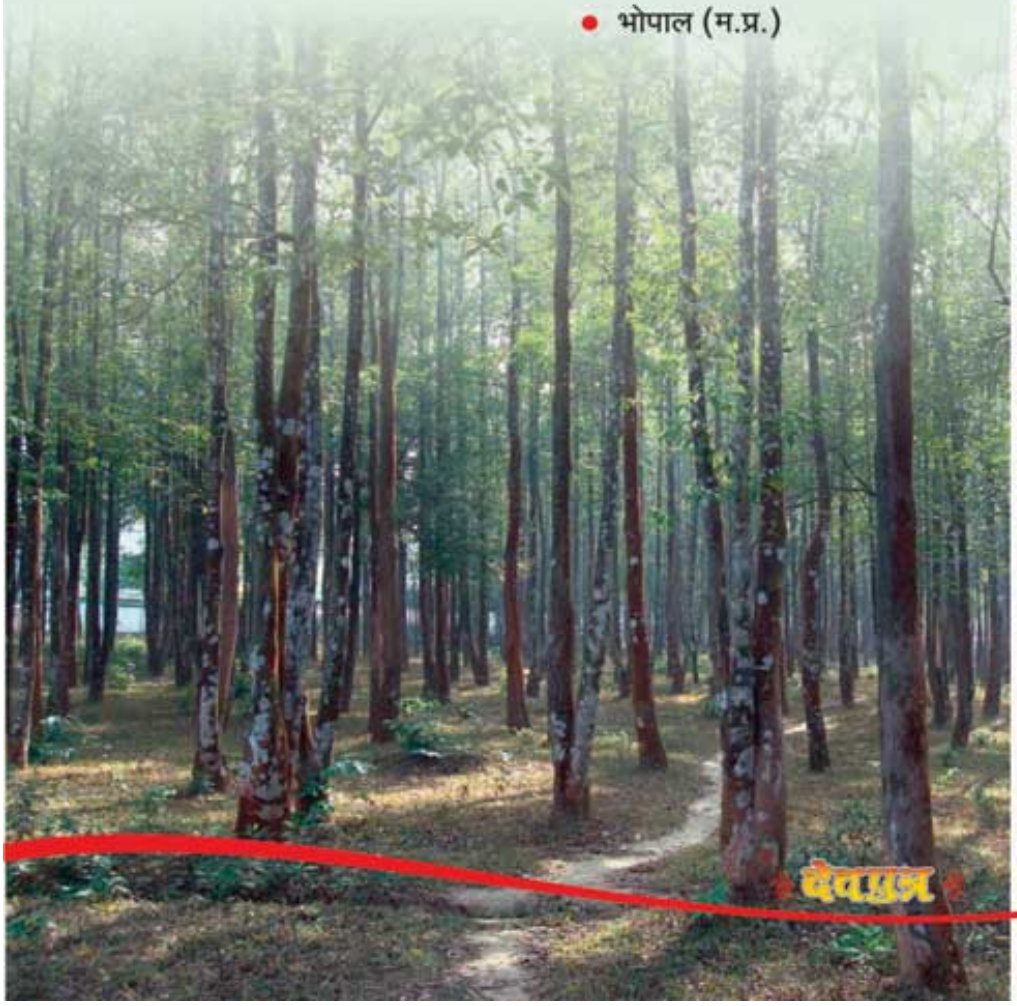

(१० अक्टू: विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस)

अनोखा उपचार

कहानी : डॉ. अमिताभ शंकरराय चौधरी

''क्या बात कर रहे है डॉक्टर सा.?'' भूरोरानी भालू की आँखों में आँसू आ गये, ''मेरे लाल को ऐसा कौन सा रोग लग गया कि वह ठीक ही नहीं हो सकता?''

इन बातों से बेखबर नन्हा रीछम् अपनी छोटी छोटी आँखों में कभी खिड़की से बाहर देख रहा था। तो कभी डाक्टर शशकेन्दु की मेज पर पड़े डाक्टरी सामानों को, या फिर दीवार पर टंगे मुस्कुराते टेडी के पोस्टर को। वह अपनी चपटी नाक और गोल सा मुँह इधर से उधर घुमा रहा था। मगर उसमें भावों की धूप छाँव बिलकुल न थी।

उसका पिता भलिन्दर सिर झुकाये कुर्सी पर बैठा था। सोच रहा था–''हे गुरु, यह मुझे किस बात की सजा देरहे हो? मेरे बेटे के साथ ऐसा क्यों हुआ?''

डॉ. शशकेन्दु ने चश्मा उतार कर हाथ में थाम लिया– ''हमारे शरीर की हर कोशिका में ४६ कोमोसोम यानी गुणसूत्र होते हैं। गुणसूत्र के कारण ही बच्चे अपने बाप माँ या दादा नाना नानी जैसे देखने में हो सकते हैं। डायबिटीज आदि रोग भी इन्हीं के कारण एक से दूसरी पीढ़ी में हो सकते हैं। इनकी संख्या घट बढ़ जाने से भी ऐसी जन्मजात विकृतियाँ हो जाती हैं। रीछम् की कोशिका में इक्कीसवाँ कोमोसोम दो हैं। यानी कुल संख्या ४७। इसे डाउन्स सिन्ड्रोम कहते हैं। इसमें बच्चे मंदबुद्धि के हो सकते हैं। कभी कभी तो दिल में छेद वगैरह होते हैं।''

मगर माँ का दिल कहाँ मानने को तैयार था। भूरोरानी भी जैसी अपनी किस्मत से लड़ रही थी–''ऐसे तो कई बच्चे होते हैं, जिनका परीक्षा परिणाम खराब होता है। कैटी मैडम ने मुझसे शिकायत की कि यह कक्षा में खोया खोया सा रहता है, पढ़ाई में मन नहीं लगाता। पहले तो मैंने डाँटा फटकारा। मगर फिर आपके पास आना पड़ा–''कहाँ तो हमने सोचा था कि यह जो एक शब्द भी ठीक से बोल नहीं पाता है, हकलाता है, और बच्चों के साथ घुलने मिलने पर ठीक हो जायेगा। मगर– ''भलिन्दर उदास हो गया, ''वहाँ तो बच्चे इसे चिढाते है। यह भी उनसे झगड़ लेता है। वह तो और एक मुसीबत– अच्छा–''

रीछम् का हाथ पकड़ कर वे दोनों केबिन से जाने लगे।

''एक मिनिट ठहरिये।'' डॉ. शशकेन्दु ने पीछे से आवाज दी, ''डाक्टरों के पास जिसका इलाज नहीं हैं, हो सकता है प्रकृति ने खुद उसका उपचार कहीं ढूँढ रखा है। महान प्रकृति की झोली में ढेर सारे अजूबे हैं।''

''मतलब?'' भलिन्दर के पाँव ठिठक गये।

''अगर आप में हिम्मत है तो एकबार दीघा जाइए। वहाँ डॉ. वुडविल एक डॉल्फिन की मदद से ऐसे मरीजों का स्पर्श चिकित्सा करते हैं। पूरी तरह ठीक हो न हो, फायदा तो बहुतों को हुआ है। तो बोलिए– जाइयेगा?''

''जरूर। हम अपने बच्चे के लिए सब कुछ दाँव पर लगा देंगे।''

डॉ. शशकेन्दु से चिट्ठी लेकर वे चल दिये...

समुद्र तट के पास ऊँचे ऊँचे नारियल और ताड़ के पेड़ों से घिरा डॉ. वुडबिल उदबिलाव के अस्पताल के सामने एक डॉल्फिन की मूर्ति बनी है– जिनके गले से एक आला लटका रहा है। यानी डॉ. डॉल्फिन।

रीछम् को देख सुन कर उन लोगों से बात करते हुए डॉ. वुडबिल दीघा समुन्दर के पास बने अस्पताल के स्वीमिंग पुल की ओर जा रहे थे।, ''सबसे पहले १८६६ में ब्रिटिश डॉ. जॉन लैंडडाम डाउन ने इस रोग की पहचान की। उन्ही के नाम से इसे डाउन्स सिन्ड्रोम कहा जाता है। वैसे इसी रोग के मरीज स्कॉच अभिनेत्री पाउला सेज को २००४ में फिल्म फेस्टिवल अवार्ड मिला। वह ओलम्पिक के नेटबॉल खिलाड़ी भी थी।'' पुल के हरे पानी में आसमानी रंग का एक डॉलफिन सीटी बजाते हुए

छलाँग लगा रही थी, ''हुई...ई...।''

डॉ. वुडबिल उदबिलाव ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, ''वह देखो–उलूपी। तुम उसके साथ खेलोगे?''

''न न –''रीछम् को मानो डर लगने लगा। अपनी कमजोर टाँगों को मोड़कर शायद वापस भागना चाहा। डॉ. वुडबिल ने कुछ नहीं कहा। उसने एक बार सीटी बजायी, ''टुँई–टू–''

पानी के अंदर से उलूपी ने जबाव दिया, ''हुई–हुई–हू।'' अपना ब्लो होल यानी नाक से पानी का फव्वारा छोड़ते हुए उसने छलाँग लगायी– जूँ–

आसपास खड़े सियार, हाथी और बन्दर सभी जानवर ताली बजाने लगे, शाबाश।''

सहमा हुआ रीछम् भी एक जगह खड़े होकर ताली बजाने लगा। माँ...माँ...– ''अस्पष्ट उच्चारण से माँ पिताजी को बुलाने लगा– माँऽऽपिऽऽ। मानो कहना चाहता है – देखो कितना मजा आ रहा है। मगर कह नहीं पा रहा था।

''यह लो।'' डॉ. वुडबिल ने रीछम् के हाथों में एक बड़ी सी लाल बॉल थमा दी। रीछम् गेंद को हाथ में लेकर इधर उधर ताक रहा था कि इसका क्या करें? इतने में उलूपी ने लगायी छलाँग और बॉल को एक टक्कर– ढूँ। गेंद जा गिरी पानी में। साथ ही साथ चौंक कर रीछम् भी फिसल गया पुल के अंदर...

''बचाओ। मेरे बेटे को बचाओ।'' भूरोरानी पागलों की तरफ दौड़ कर आयी।

रीछम् डूब रहा था।

''डाक्टर।'' भलिन्दर ने दौड़ कर वुडबिल के हाथ थाम लिए, ''रीछम् तैरना नहीं जानता।''

''घबराइये नहीं।'' वुडबिल मुस्कुराता रहा।

और तभी उलूपी ने पानी के नीचे से रीछम् को एक धक्का मारा। वह सतह के ऊपर आ गया। उलूपी ने सीटी बजायी– उल्लास भरी।

इसी तरह धकेल धकेल कर रीछम को किनारे तक ले आयी। भूरो दोनों बाँहों को फैलाकर वहीं बैठ गयी, ''मेरा बेटा। मेरा लाल।''

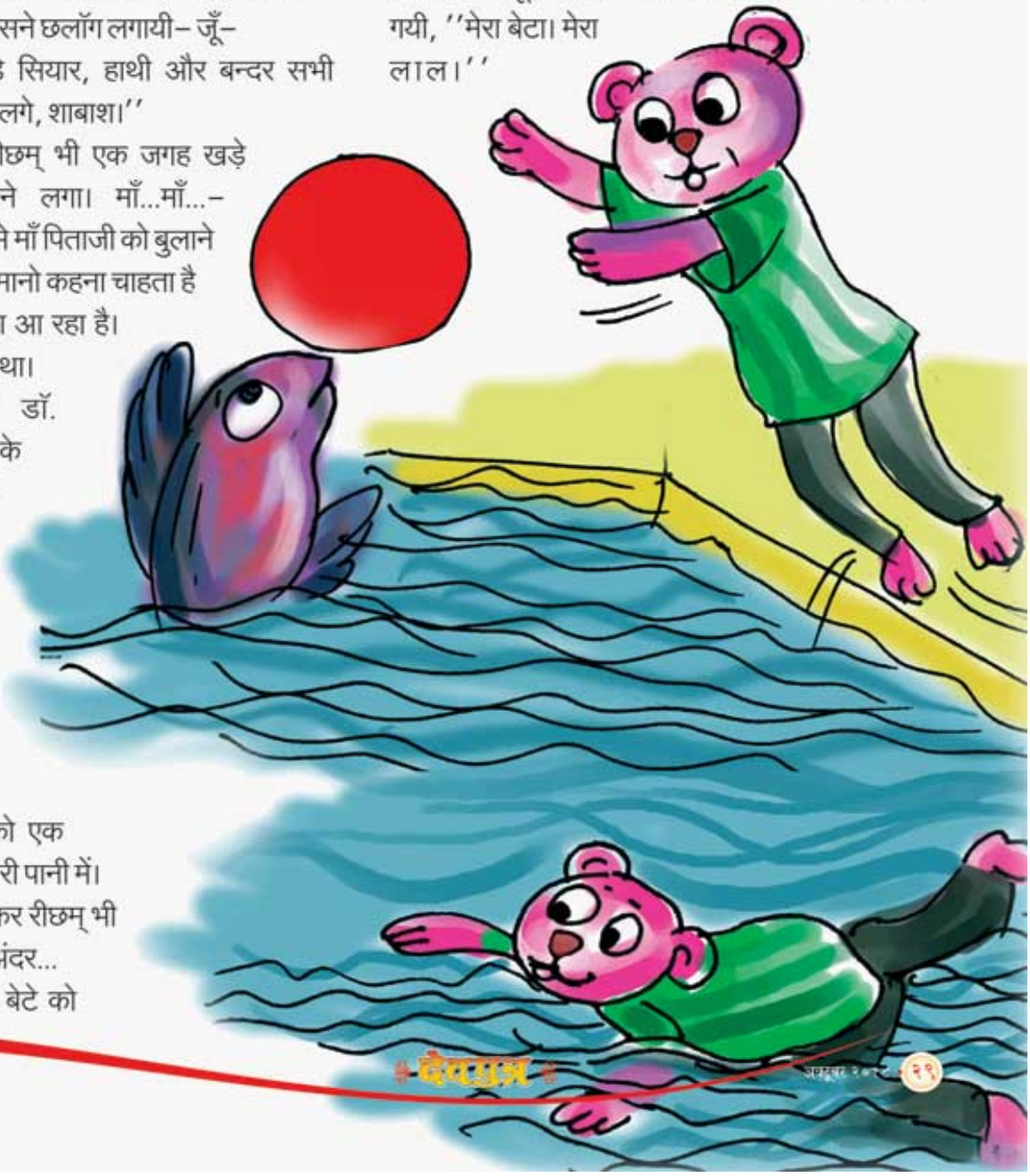

मगर रीछम् के चेहरे पर डर का नामो निशान नहीं था। वही भी मुस्कुरा रहा था।

''उलूपी ने तुमको बचा लिया। उसे धन्यवाद नहीं कहोगे?'' वुडबिल उसका कंधा थपथपाने लगा।

''शु....शु...उ...! रीछम अपनी बातों को पूरा भी कर पाया।

उलूपी ने सीटी देते हुए पानी के ऊपर छलाँग लगायी।

''इसे कुछ खिलाओगे नहीं? डॉ. वुडबिल ने रीछम् के हाथ में एक चॉकलेट केक दे दिया। रीछम् ने उसे पानी में फेंका। उलूपी ने उछल कर लपक लिया।

फिर दूसरे दिन, और तीसरे दिन...यही क्रम चलता रहा। उलूपी रीछम् को मंद मंद धक्का देकर पुल के अंदर तैराती। वह भी अब हाथ पाँव चलाने लगा है। काफी हद तक उसका डर भी गायब है। दुबले–पैरों में मानों ताकत आने लगी। आँखों में एक चमक...

''यह भी प्रकृति का अजूबा है। एक रहस्य!'' वुडबिल भलिन्दर और भूरोरानी को बतला रहे थे, ''जिस रोग का इलाज दवाओं से संभव नहीं है, उसे डॉ. डॉल्फिन काफी हद तक ठीक कर सकता है। फलोरिडा के डॉ. नाथनसॉन ने सिआमी यूनिवर्सिटी में टीना नाम के डॉल्फिन की मदद से यह इलाज शुरु किया था। कौन कह सकता है कि शायद उसके मुँह सें निकलने वाली तरंग ही रीछम् के दिमाग में कुछ बदलवा लाती हो। जैसे अल्ट्रासाउंड तरंगों को हम सुन भी नहीं सकते– वैसा ही कुछ...''

भलिन्दर तो अपने काम के सिलसिले में लौट गये। भूरो रीछम् को लेकर उलूपी के पास रह गयी। डेढ़ दो महीने बाद भलिन्दर लौटा तो उसे देखते ही रीछम् दौडा पिताजी आ गए...। वह पिता से लिपट गया।

भलिन्दर की आँखों में आँसू आ गये। आज पहली बार उसने अपने बेटे के मुँह से इतना बड़ा वाक्य जो सुना था।

● **वाराणसी (उ.प्र.)**

आपकी पाती

● **प्रमोद सोनवानी, तमनार (छ.ग.)** – देवपुत्र मासिक का जुलाई अंक पढ़ा। प्रस्तुत अंक में अपनी बात भैयाजी के ज्ञान से सराबोर है।

वही मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'गुल्ली–डण्डा' व रमाशंकर जी की 'आत्मविश्वास हो तो' कहानियाँ नवीन विचारात्मक पहलू लिये हुए हैं।

देश के प्रख्यात बाल साहित्यकार कृष्ण शलभ रावेन्द्र रवि व पवन पहाड़िया की कविता सरल, सहज व बालमन के अनुरूप गेय हैं। पत्रिका की लघु कहानी, प्रसंग, चित्रकथा व अन्य स्तंभ बच्चों को अवश्य प्रभावित करेगा।

सुन्दर अंक के सफल प्रकाशन हेतु, बधाई व शुभकामनाएँ।

****

● **सुरेन्द्रचंद 'सर्वहारा', कोटा (राज.)** – देवपुत्र का जून २०१८ का अंक प्राप्त हुआ। देवपुत्र बच्चों की सम्पूर्ण पत्रिका है जो उनके व्यक्तित्व के विकास में बहुत सहायक है। इस अंक के आवरण पर लिखी पंक्तियों ने ही अंक के उद्देश्य को स्पष्ट कर दिया है। मोबाईल की आभासी दुनिया से बाहर निकलने पर ही पता चलता है कि आकाश कितना बड़ा है और प्रकृति कितनी सुन्दर है। यही बात सम्पादकीय में भी बच्चों के मिट्टी में खेलने के संदर्भ में कही गई है। इस अंक में पर्यावरण और देशभक्ति से ओतप्रोत सभी रचनाएं बच्चों को जीवनोपयोगी शिक्षाएँ देती हैं। अन्न और पानी की बर्बादी, जीवन में योग का महत्व, स्वच्छता, वायु प्रदूषण, परोपकार आदि अनेक बातों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। ये बातें ही बच्चों की संस्कारित कर अच्छा मानव बनाती हैं।

किसका चारा?

चित्रकथा
संकेत गोस्वामी

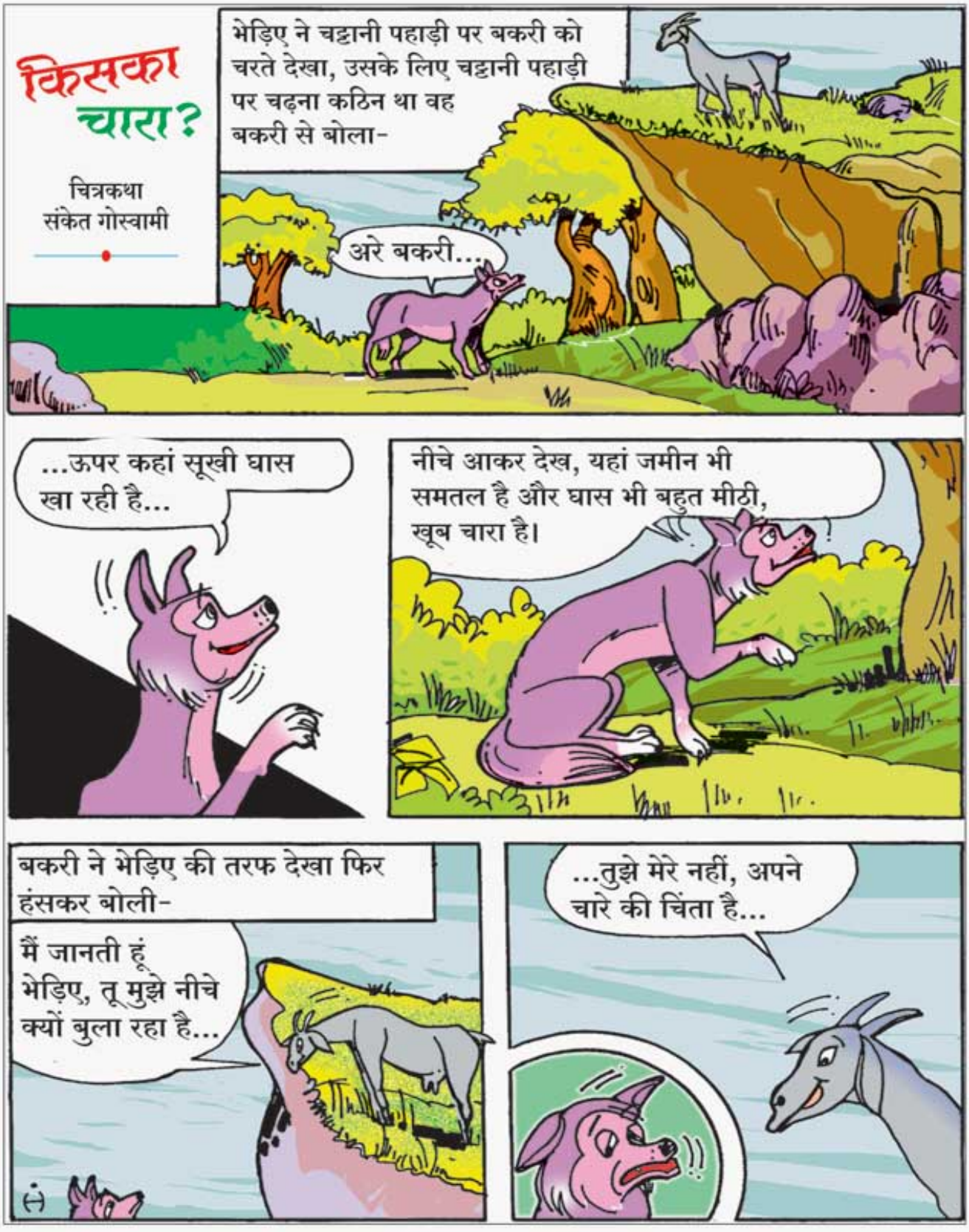

रोबो और टोटो

कहानी : रमेश यादव

हां तो मेरे प्यारे–प्यारे
सोनू, मोनू, राजू, दक्षा,
जल्दी से कान लगाओ,
शुरु हुई कहानी की कक्षा।

कछुआ और खरगोश की कहानी तो तुम लोग जानते हो। याद है ना। वहीं भाई जब दोनों में दौड़ होती है और कछुआ दौड़ जीत जाता है। खरगोश की हार और कछुए के जीत की वजह भी हम जानते हैं। अति आत्मविश्वास के चलते खरगोश रास्ते में सो जाता है, और कछुआ उसे सोता देख चुपके से आगे बढ़ जाता है। कछुआ दौड़ जीत जाता है, और खरगोश हार जाता है। इस कथा का सार हम जानते हैं –''स्लो एंड स्टेडी विन दि रेस।'' (धीमा पर सातत्यावाला ही जीतता है।)

तो मित्रो, अपनी कहानी की अगली कड़ी यहीं से शुरु होती है। खरगोश जाति अपनी इस हार की पीड़ा को सदियों तक भुला नहीं पाती। सक्षम और सामर्थ्यवान होने के बावजूद वर्षों पहले उनका एक परदादा अपनी एक छोटी सी गलती के चलते दौड़ हार गया और यह बात इतिहास बन गई। सदियों के इस दर्द को खरगोशों की युवा पीढ़ी पचा नहीं पा रही थी। अतः युवा पीढ़ी मिलकर भगवान के दरबार में जाती है। पूजा–अर्चना करते हुए ईश्वर से आग्रह करती है कि– हे प्रभु, अपने माथे के इस कलंक को मिटाने के लिए हमें दौड़ का एक और मौका दीजिए। ईश्वर ने उन्हें समझाया कि वह एक घटना मात्र थी, जो मानव जाति के प्रबोधन के लिए आवश्यक थी। तुम लोग अजेय हो यह हम सभी जानते हैं। ''तथास्तु'' कहकर ईश्वर लोप हो गए।

मगर इससे खरगोशों की संतुष्टि नहीं हुई। एक तेज तर्रार युवा खरगोश 'रोबो' तनतनाते हुए कछुओं के सरदार के पास गया, और पुनः दौड़ लगाने का आह्वान करने लगा। समझाने की काफी कोशिशों के बावजूद भी जब वह युवा रोबो बात नहीं मानता है तो सरदार अपनी टोली के युवा तुर्क कछुआ 'टोटो' को इस मिशन पर लगा देता है।

निश्चित समय पर एक सरपट मैदान पर दौड़ शुरु होती है और इस बार रोबो दौड़ जीत जाता है सारे खरगोश खुश हो जाते हैं और अपनी खुशी का उत्सव मनाते हैं। टोटो को अपनी इस हार पर बेहद दुःख हो रहा था। आखिर इतने वर्षों बाद इतिहास जो बदल गया था। इस उत्सव में टोटो भी शामिल होता है। रोबो को जीत की बधाई देते हुए वह खरगोश बिरादरी को पुनः एक बार दौड़ के लिए चुनौती देता है। रोबो उसकी चुनौती स्वीकार कर लेता है।

हाँ, तो मित्रों कहानी अब नया मोड़ ले रही है, अतः जागते रहो। नई भूमि पर नया युद्ध। होशियार।

दौड़ तय होती है। इस बार मार्ग बदल दिया जाता है। सीमा को पार करके दूसरे प्रदेश में जाने का लक्ष्य रखा जाता है। दौड़ प्रारंभ होती है। एक दो तीन फायर...। रोबो लंगी लंबी छलांगें भरता आगे बढ़ जाता है। बड़ी लंबी दूरी तय करते हुए रोबो एक विशाल समुंदर के पास आकर ठहर जाता है अब समुद्री रास्ते को कैसे पार करें यह चिंता उसे सताने लगी है। क्योंकि वह तैरना नहीं जानता था। दूसरे दूर तक सरपट रास्ता नजर नहीं आ रहा था। आगे क्या करें इस सोच विचार में वह डूब जाता है। टोटो का दूर–दूर तक कहीं अता पता नहीं था। उसे जोरों की भूख लगी थी, अतः आसपास की झाड़ियों में घूम–घूमकर वह

जमकर घास खाता है अब उसे आलस और नींद सताने लगती है। जो होगा, आगे देखा जाएगा।'' यह सोचकर वह पुनः अति उत्साह का शिकार हो जाता है। और आराम करने के विचार से समुंदर के किनारे ठंडी हवा में सो जाता है। टोटो धीरे–धीरे सीमा पार करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुंच जाता है और इस बार दौड़ जीत जाता है।

हाँ तो प्यारे मित्रो, कहानी यहाँ खत्म नहीं हुई, अब कहानी की रोचकता शुरु होने जा रहा है क्रिकेट में ट्वेंटी–ट्वेंटी मैच को आप लोगों ने तो खूब देखा सुना है। अब रोबो और टोटो की मैंच फिर शुरु होने जा रही है। इस बार दुनिया की सारी प्राणी जाति की नजरें उनकी दौड़ पर टिकी थी। अस्तित्व की दौड़ बन गई थी यह..फिक्सिंग..। हाँ,हाँ, पूरी फिक्सिंग के साथ। तो सुनों, आँखों देखा हाल...

खरगोश प्रजाति पुनः अपनी हार पर क्षोभ व्यक्त करती है और कछुआ प्रजाति खुशियां मनाती है दोनों ओर के लोग एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप करते हुए भरी सभा में भिड़ जाते हैं। कोई समाधान न निकलता देख दोनों ओर के दल अपने–अपने तरीके से ईश्वर को गुहार लगाते हैं। मगर इस बार भगवान प्रकट नहीं होते। अंततः दोनों दल आमने सामने बैठकर पुनः चिंतन करते हैं। आखिर कब तक ये हार–जीत का सिलसिला चलेगा। कब तक हम शह और मात का खेल खेलेंगे। अब तो दौर बदल गया हैं। नए जमाने के इस ग्लोबल युग में हमें एक नई सोच के साथ आगे बढ़ना होगा... इत्यादि...इत्यादि। मगर बैठक में कुछ ऐसे तत्व भी मौजूद थे जो पुनः दौड़ करवाना चाहते थे। दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए। हाँ...हाँ... होना चाहिए.....'' पीछे से आवाज आती है।

मगर रोबो और टोटो सीमा पार की नई दुनिया से परिचित हो चुके थे। वे भी आगे बढ़ना चाहते थे साथ ही अपनी बिरादरी का सम्मान भी रखना चाहते थे। पर इस तरह दौड़ लगाकर नहीं बल्कि किसी और माध्यम से। मगर दौड़ की बात जोर पकड़ने लगी। आखिर रोबो और टोटो की आपस में कानाफूसी हुई और वे सबके सामने एक दूसरे की चुनौती स्वीकारते हुए दौड़ के लिए तैयार हो जाते हैं। पुनः दौड़ की शर्त सीमा पार तक की तय की जाती है।

नियत समय पर रेस आरंभ होती है। लोग अपनी–अपनी

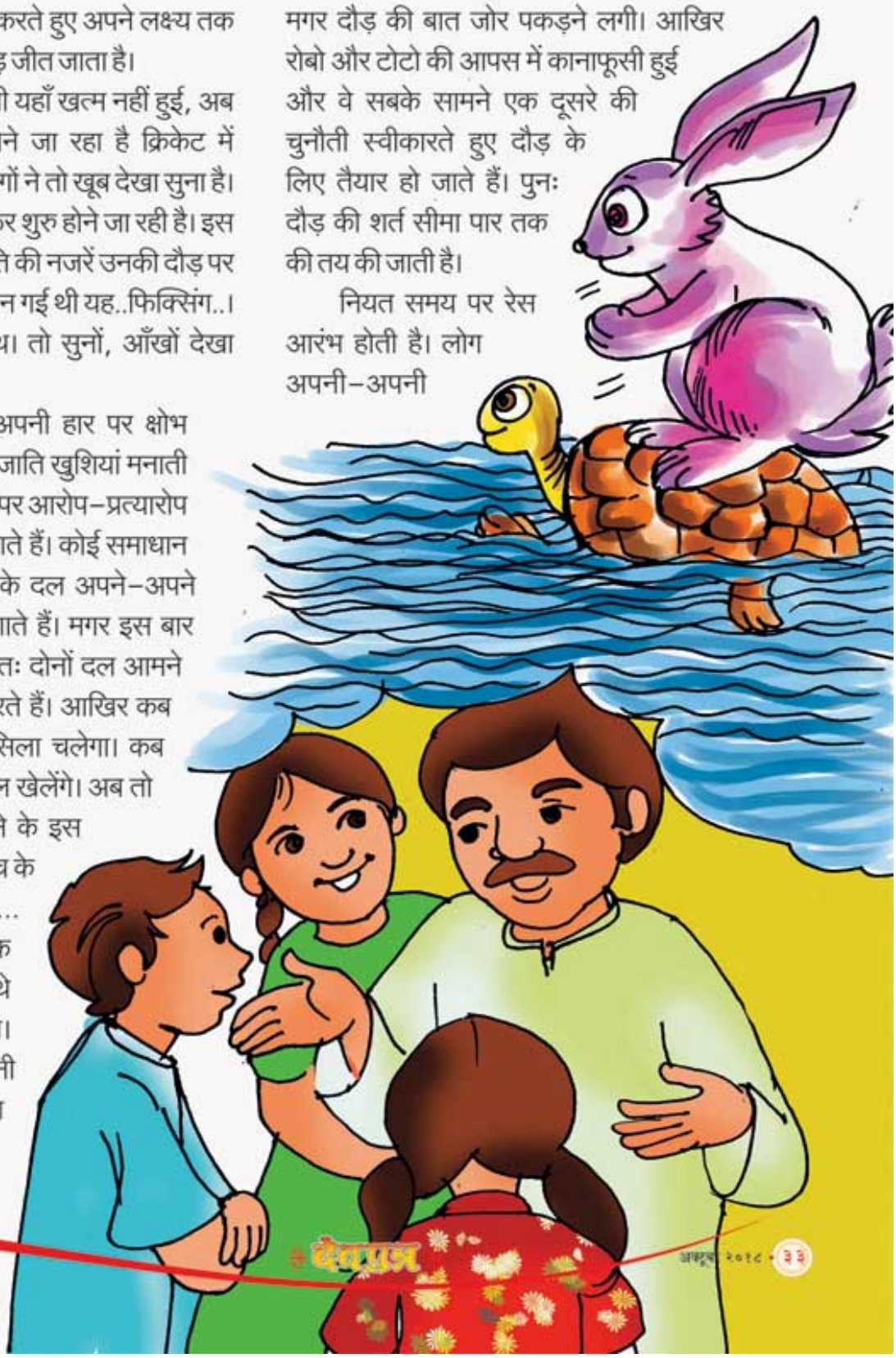

बिरादरी की दुहाई देते हुए अपने अपने खिलाड़ी का मनोबल बढ़ाते हैं। अपने–अपने झंडे लहराते हैं। रोबो और टोटो का तनाव बढ़ने लगता है। दौड़ शुरु हो इसके पहले वे एक दूसरे को गले लगाते हैं, और दौड़ की तैयारी में खड़े हो जाते है। एक–दो–तीन, फायर...'' दौड़ आरंभ होती है। जब तक दोनों खिलाड़ी दौड़ते हुए नजर आते हैं तक लोगों का शोरगुल चलता रहता है। आँखों से ओझल होते ही लोगों की भीड़ छटने लगती है। लोग अपने –अपने घरों को लौट जाते हैं।

हमेशा की तरह रोबो तेज भागता है। प्रथम चरण में ही टोटो को पछाड़ते हुए वह आगे बढ़ जाता है। तीसरे चरण में वह जैसे ही प्रदेश के बाहर पहुंचता है, पुनः उसे बड़े समुंदर का सामना करना पड़ता है। अब उसके सामने समुद्र पार करने की समस्या खड़ी हो जाती है। मगर इस बार वह बेफिक्री से सोता नहीं न तो अति उत्साह में आराम करता है। बल्कि इस बार टोटो का इंतजार करता है। टोटो भी वहां पहुंचते ही उसकी खोज खबर लेता है। दोनों भरपेट खाना खाते हैं। बातें करते है और आगे के रास्ते की योजना बनाते है। आखिर उनका सामना नए प्रदेश के लोगों के साथ जो होना था। अतः नए जमाने के आह्वान स्वीकार करते हुए हैं, टोटो अपने मित्र रोबो को पीठ पर बैठा लेता है और तैरते हुए आगे बढ़ने लगता है। पीठ पर बैठ रोबो रास्ते का मार्गदर्शन करता है। समुंदर पार हो जाता है और दोनों साथ–साथ लक्ष्य तक पहुंच जाते हैं।

परदेश में अपने वतन का झंड़ा फहराते हुए, वे दोनों गौरव समारोह में संदेश देते हैं। ''नए दौर के इस दौड़ में न कोई जीत है, न कोई हार। लक्ष्य हासिल करने के लिए अब साथ–साथ चलने की जरूरत है।''

● मुंबई (महा.)

सुंदर रंग भरो

● चाँद मोहमम्द घोसी

(३१ अक्टूबर : सरदार पटेल जयंती)

लौह पुरुष

कविता : हेमराज पाटीदार 'हमराही'

आज जरूरत पुनः देश को, सच्चे पहरेदार की।
फिर यादों में हम खोए हैं, लौहपुरुष सरदार की।।

धीर-वीर दृढ़ निश्चय वाला, सिंह पुरुष बलशाली था,
शत्रु डरते वाणी सुनकर, ऐसा शक्तिशाली था।
सोमनाथ का उद्धारक वह, शिवशंकर प्रलंयकर था,
ब्रिटिश-पाक दुश्मन के सम्मुख, वीरभद्र भयंकर था।
काँपे शेख-निजाम कभी, क्या कहना उस ललकार की,
फिर यादों में हम खोए हैं, लौह पुरुष सरदार की।।

नीवं का पत्थर बना रहा वह, नहीं कंगूरा बन पाया,
बड़े-बड़े महलो में रहना, उसे रास ना आ पाया।
वह मजदूर किसान हितैषी, जन-जन का सरदार था,
दीन-दुःखी का परम हितैषी, सबका तारणहार था।
खण्ड-खण्ड भारत को जोड़ा, जय हो उस दरबार की,
फिर यादों में हम खोए हैं, लौह पुरुष सरदार की।।

जो जन-मन की पीड़ा समझे, वही देश का शासक हो,
सत्ता जनता की दासी हो, शक्ति शत्रु विनाशक हो।
हर बच्चा भारत माता का, देशभक्त बलशाली हो,
हिन्दू राष्ट्र की रक्षा हेतु लड़ने की तैयारी हो।
सुखद कल्पना करता था वह, ऐसी शुभ सरकार की।
फिर यादों में हम खोए हैं, लौह पुरुष सरदार की।।

ऐक्य शक्ति का भाव जगाकर, हम पटेल से बन जाएँ,
मातृभूमि की बलिवेदी पर, प्राण प्रसून चढ़ा पाएँ।
सभी संगठित होकर अपने, बल-वैभव को प्रगटायें,
कीमत हमें चुकानी होगी, भारत माँ के प्यार की,
फिर यादों में हम खोए हैं, लौह पुरुष सरदार की।।

• देहरिया (म.प्र.)

हनुमान जी का कौनसा रूप है किससे बड़ा?

सिन्धु लांघते मारूती, संकट सम्मुख बड़ा पड़ा।
हनुमत् को करना पड़ा, रूप स्वयं छोटा बड़ा।।

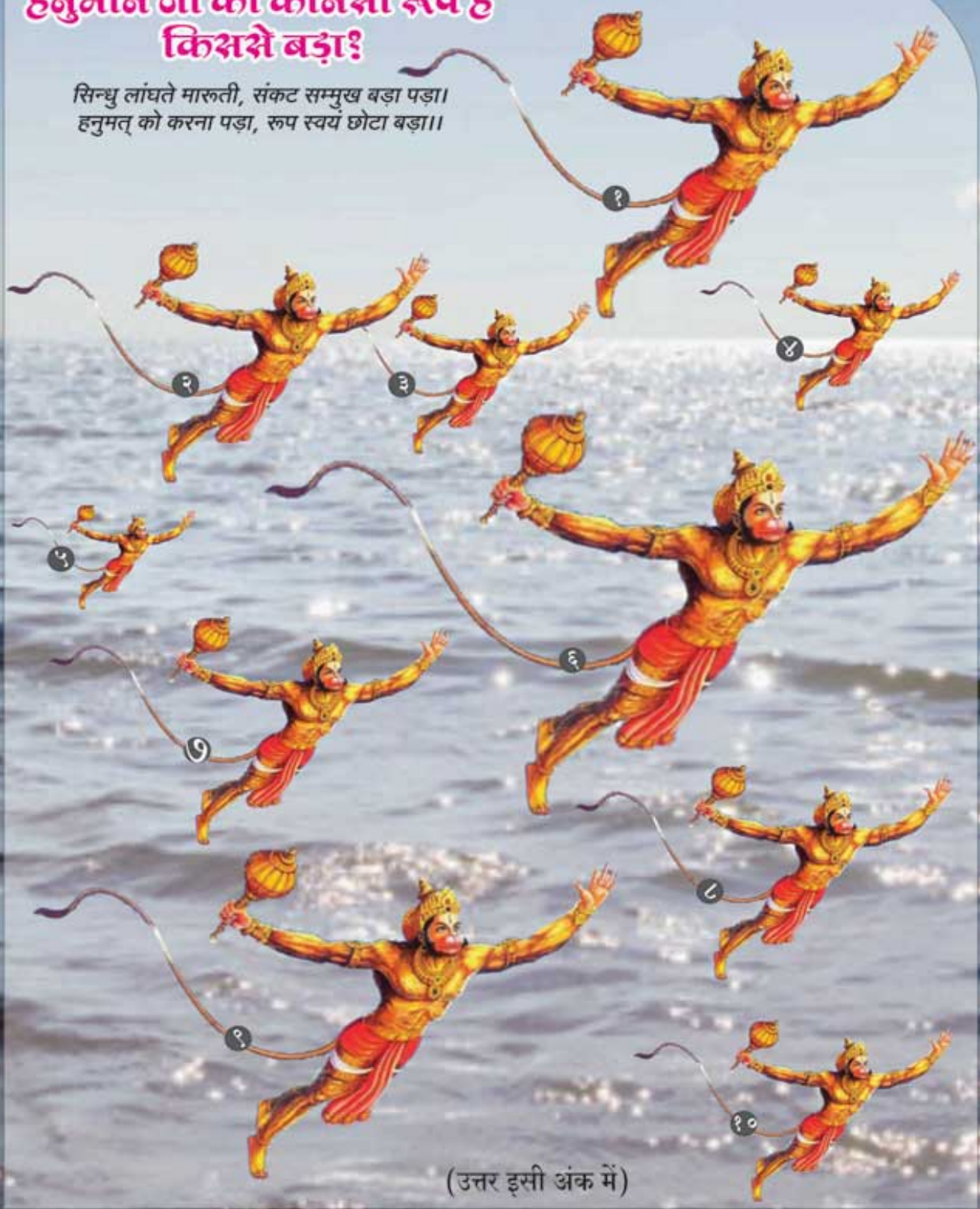

(उत्तर इसी अंक में)

(१ अक्टूबर : विश्व वृद्ध दिवस)

अन्तर्ध्वनि

कहानी : कमला प्रसाद चौरसिया

रंजन को अकेले बाजार जाने में न जाने क्यों भय लग रहा था। वह किसी साथी की तलाश में था। इधर उधर नजर दौड़ाने पर उसे खंजन दिखाई दिया। उसने आवाज दी। खंजन उसकी उखड़ी–उखड़ी सी आवाज सुनकर हड़बड़ा हुआ सा लपका चला आया, ''क्या बात है रंजन? इस तरह घबराए हुए से क्यों हो?

''मेरे साथ चल न।'' रंजन ने अनुनय विनय सी करते हुए कहा, ''बाजार तक जाना है।''

''तो इसमें इतना अधीर होने की कौन सी बात है। तुम अकेले ही जा सकते हो। मुझे क्षमा कर दे। मेरा मन खेलने को हो रहा है। मेरे और खिलाड़ी मित्र आने वाले हैं। मैं उन्हें बुलाकर आया हूँ। मैं तेरे साथ चला जाऊँगा तो बेचारे निराश हो जायेंगे।''

''मेरे साथ चल मेरे भाई। मुझे न जाने क्यों भीतर ही भीतर बैचेनी सी हो रही है। कहीं ठहरेंगे नहीं। तुरंत लौट आएँगे। तुम्हारे साथ खेलने वाले मित्र आकर थोड़ी देर इंतजार कर लेंगे। देख, मना मत कर। कोई बहाना भी मत बना। मुझे लगता है कि कहीं कुछ होने वाला है।''

''अब तू नहीं मानता तो चल, किन्तु सामान खरीदा–खरीदी में विलंब मत करना। मैं जानता हूँ, तुझे चीजें खरीदने के पहले परखने का बहुत शौक है। व्यर्थ ही समय गँवाता है।''

दोनों साथ–साथ चल दिए। खंजन बायीं और रंजन दायीं ओर होकर सड़क पर

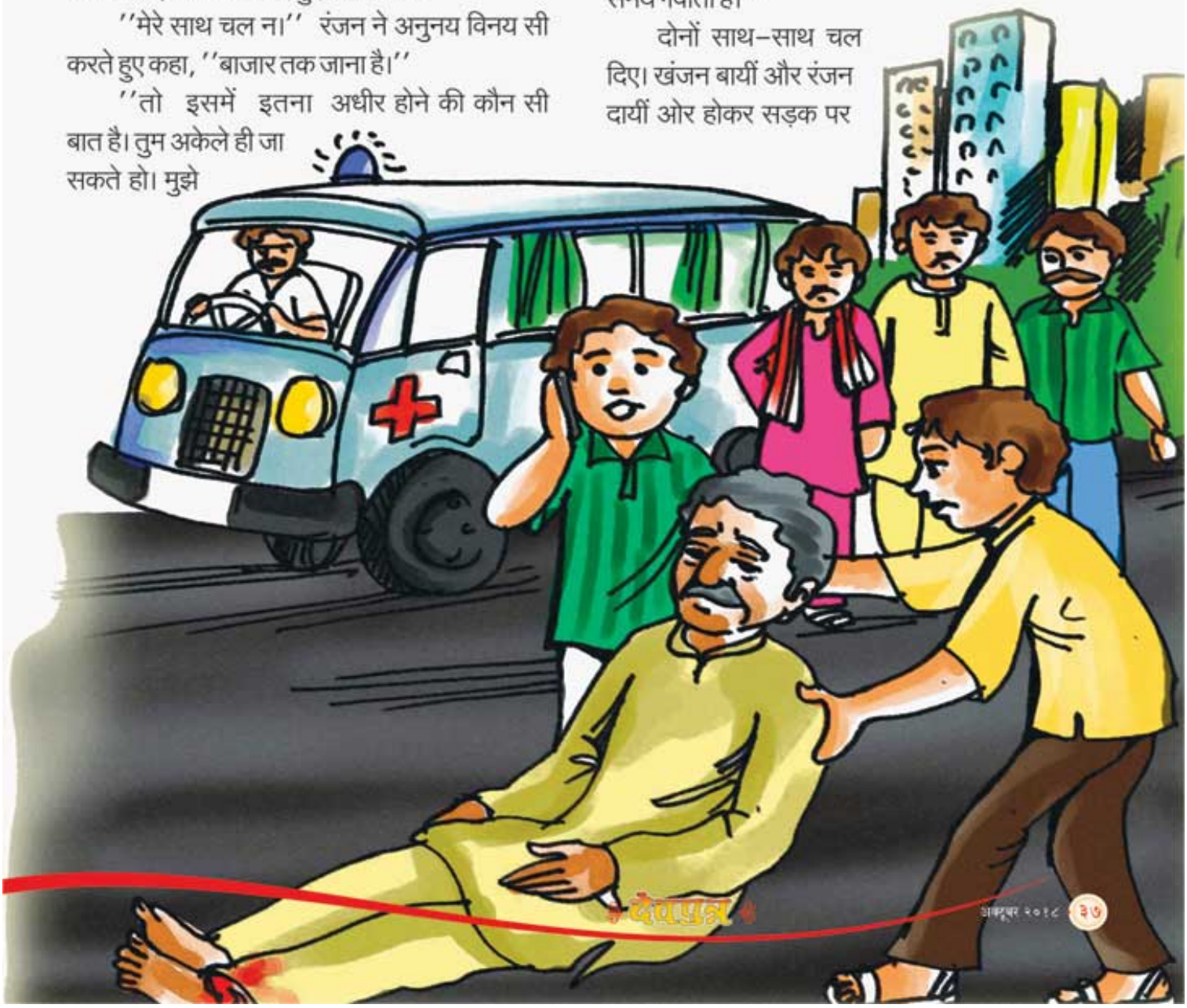

चलने लगे। वाहनों का आना जाना तेज था। वे कुछ दूरी पर ही चले होगे कि एक मोटर साइकिल वाला रंजन को रंगड़ते हुए निकला। खंजन ने उसे झट अपनी ओर खींच लिया, ''ध्यान कहाँ है तेरा रंजन? देखता नहीं, ट्रेफिक कितना जबर्दस्त है। ऐसे चलोगे तो घायल हुए बिना न रहोगे।'' उसने रंजन को अब अपनी बायीं ओर कर लिया। वह समझ रहा था कि रंजन किसी चिन्ता में, उधेड़-बुन में गुम है। उसका ध्यान सड़क पर बिलकुल नहीं है। वे अभी थोड़ी ही दूर दोराहे के निकट पहुँचे होंगे कि देखा कि एक वृद्ध कराहता हुआ सड़क पर पड़ा है। उसके शरीर से रक्त बह रहा है। लोग उसे घेरकर तो खड़े हैं किन्तु कोई भी उसे उठाने और उसके लिए कुछ करने के लिए आगे नहीं आ रहा।

दोनों भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ गए। रंजन ने दयार्द्र होते हुए वृद्ध को हाथों हाथ उठाया और खंजन से १०८ के लिए फोन करने को कहा। खंजन ने पहले तो कहा कि क्यों परेशानी मोल ले रहे हो। मुझे वैसे ही देर हो गई है। चल उठ। चलकर अपना काम कर। यहाँ अनेक दयावान हैं कोई न कोई उसे सम्हाल लेगा। ''नहीं खंजन! ऐसा नहीं सोचते। किसी और दयावान की आस देखते हुए इन्हे यों ही छोड़ देना ठीक नहीं। मौका हाथ आया है तो इसका उपयोग करना चाहिए। हम सहायता कर सकते हैं। लाओ, मेरा मोबाइल मुझे दो। मैं फोन करता हू।'' उसने फोन किया। १०८ आई और उस वृद्ध के साथ वह भी अस्पताल चला गया। वहाँ उसने उन्हे दाखिल कराया, उनकी प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था की। उनकी मरहम पट्टी में हाथ बंटाया, उन्हे पानी और रस पिलाया। उन्हे जैसे ही होश आया, उसके परिवार के लोगों को फोन कर सूचित किया।

खंजन यह सब देख हैरान रह गया, '' सारे पैसे तुमने इनकी सेवा टहल में खर्च कर दिए। अब स्टेशनरी का सामान कैसे खरीदोगे?''

''चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं खंजन। पैसे ही सही उपयोग हो गया। यही मेरे लिए सही व्यय है। मेरे मन में न जाने क्यों हूक उठ रही थी। घर से माँ तो तौल-तौल कर पैसे दे रही थी किन्तु मैं ही हठ किए हुए था। मन बहलाने आदि के बहाने कुछ अधिक ही पैसे ले आया था। मुझे माफ करना, अब मैं तुमको चाट नहीं खिला पाऊँगा।''

● भोपाल (म.प्र.)

सही उत्तर

ढूंढो तो जानें

(१) स (२) इ (३) द (४) ई (५) अ (६) ब

बड़ा छोटा

५ ४ ३ १० ८ ७ २ ९ १ ६

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) नल-नील (२) द्रोणाचार्य (३) छत्रपति शिवाजी (४) पटना (५) मेष संक्रान्ति (वैशाखी)
(६) गुप्त वंश के सम्राट चंद्रगुप्त (७) महर्षि पाराशर रचित वृक्ष आयुर्वेद
(८) लाला हनुमंत सहाय (९) हकीम खाँ सूर (१०) केरल

आठ अंतर बताओ

(१) तस्वीर वाली गाड़ी में कम उपहार हैं। (२) नंबर प्लेट खाली है। (३) माँ की बिंदी गायब है
(४) पिताजी के बाल में अंतर है। (५) उनकी मूंछ में भी अंतर है।
(६) उनके पीछे टेबल छोटा है। (७) बच्ची हँस नहीं रही है। (८) उसका रिबन (फीता) भी गायब है।

(भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत)

बाल प्रस्तुति

शहीद की कीमत

कहानी : अनमोल सोनी

एक बुढार नाम का नगर था। उस नगर में एक ऐसा परिवार रहता था जिस घर का वीर सपूत हमारे भारत देश के लिए लड़ता हुआ शहीद हो गया था। वह वीर सपूत भी किसी का बेटा था, किसी का पति था, किसी का भाई था और किसी का पिता था। उसकी एक प्यारी सी बेटी थी जिसका नाम वीरा था। वह वीर जवान जिसका नाम सूरज था। वह अभी तीन माह पूर्व ही शहीद हुआ था।

उस शहीद के स्वजनों को दस लाख रुपये देने के लिए मंत्री जी ने अपने कार्यालय बुलाया। शहीद की पत्नी और उसकी बेटी देनों उस कार्यालय गए। तभी उस कार्यालय के चौकीदार ने उन दोनों को दरवाजे पर रोक लिया।

चौकीदार बोला– ''अरे, कहां घुसे जा रहे हो, रुकों। कौन हो तुम लोग?''

तभी वह ५ वर्ष की नन्ही सी बच्ची बोली ''मैं अपने पिताजी की बेटी हूँ।''

चौकीदार बोला– ''कहां है तुम्हारे पिताजी?''

बेटी– ''मेरे पिताजी तो आसमान में है। वह देखो।''

इतने में मंत्री जी कार्यालय से निकले और उन दोनों पर दृष्टि पड़ी।

मंत्री जी बोले ''आओ! तुम दोनों उसी फौजी के घर के हो ना जो सीमा पर लड़ते हुए शहीद हुए है। लो दस लाख का चेक ले लो और जाओ यहां से।''

इतना सुनते ही बेटी के आँख से आँसू आ गए इतने में ही मंत्री का बेटा वहां पर आया और फिसलकर गिर गया। मंत्री जी दौड़ पड़े और अपने बेटे को उठाया मंत्री जी बोले – ''बेटा, तुझे कहीं चोट तो नहीं आई?''

मंत्री जी का बेटा जो मात्र १७ वर्ष का था उसने बड़े दुखी मन से कहा– ''पिताजी, मुझे एक चोट क्या आयी आपका मन तिलमिला उठा। जरा उस शहीद के बारे में सोचिए जो बम के धमाके में झुलस गया।''

मंत्री जी बोले– ''तो सरकार ने उसके शदाहत पर दस लाख रु. दिये तो हैं।''

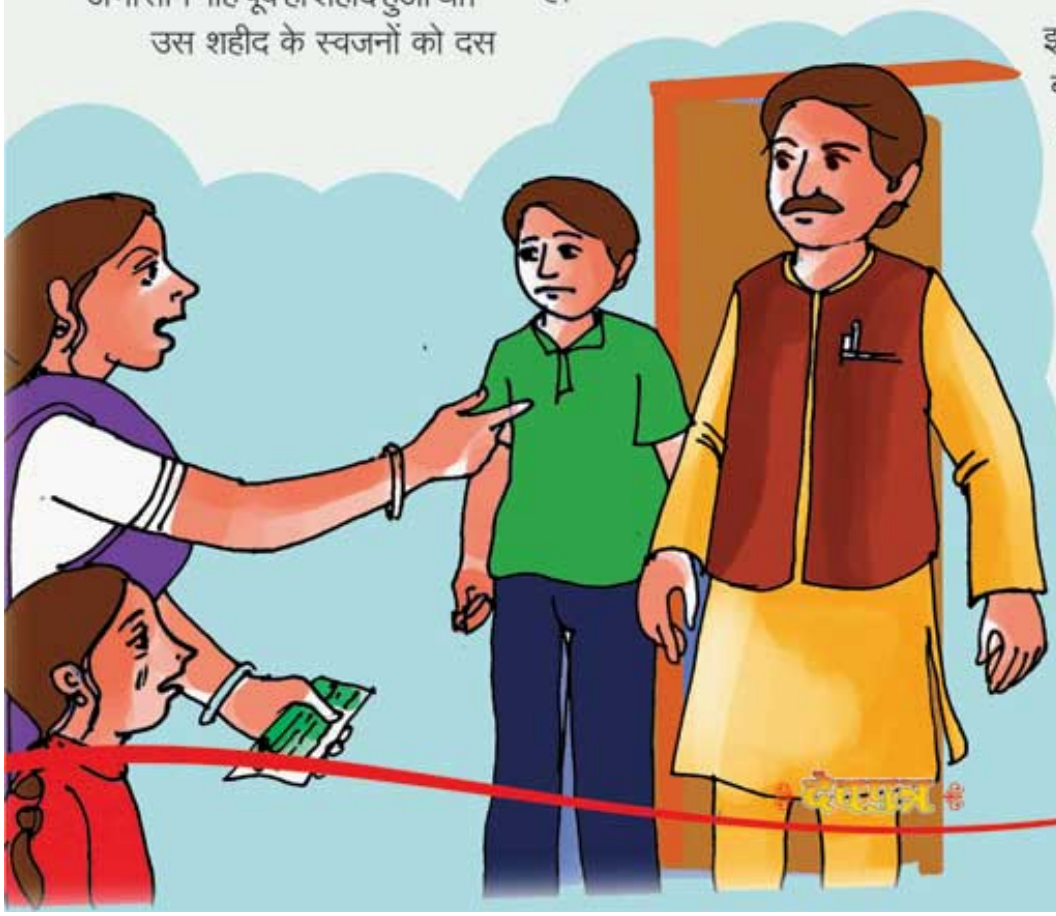

इतने में उस शहीद की पत्नी बोली–''मंत्री जी, मैं आपको दस लाख नहीं बीस लाख दूंगी आप अपने बेटे को फौज में लड़ने के लिए भेज दीजिए।''

मंत्री जी सोच में डूब गए उनका मन अपनी करनी के लिए उन्हें दुत्कार रहा था। उन्होंने उस शहीद के परिजनों से मॉफी मांगी। उन्हें ये समझ में आ गया कि किसी शहीद की कोई कीमत नहीं होती। वो तो अनमोल है।

● बुढार (म.प्र.)

फोकटराम ने दावत उड़ायी

कहानी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

फोकटराम यूँ तो थे सिर्फ तेरह साल के ही, पर लम्बे डील–डौल के कारण पूरे मोहल्ले में मशहूर थे। बच्चे से लेकर बूढ़े तक उन्हें अपना समझते थे, नितांत अपना। फोकटराम बातूनी भी कम न थे। मोहल्ले के सारे लोगों को उनका स्वभाव मालूम था, इसलिए कोई उन्हें मुँह न लगाता था। कारण स्पष्ट था। फोकटराम यदि किसी से बातें करने या टांग अड़ाने पर उतारू हो जाते तो बस, समझिए उस भले आदमी की खैर नहीं। ढेर सारा थूक मूँह में जमा हो जाता सो अलग। क्योंकि फोकटराम के बोलते समय थूक की बाढ़ आ जाती थी।

एक और खास आदत थी फोकटराम में और वह थी फोकट का माल उड़ाने की। फोकट को बस फोकट में माल उड़ाने को मिल जाए, फिर उन्हें आप कहीं भी बुला सकते हैं। वह हर हाल में फोकट का माल उड़ाने की गरज से आपके पास जरूर पहुँचेगे। समय और स्थान की कोई बाधा नहीं।

एक दिन की बात है मोहल्ले के हम पांच लड़कों ने मिलजुलकर फोकटराम को छकाने की योजना बनायी। हम सभी शाम को पाँच बजे फोकटराम के घर की बगल से गुजरे। उस समय पर अपने तीन वर्षीय भाई के साथ पंतग उड़ाने में जुटे हुए थे। उनको अपनी तरफ आता देख हमने बातों का सिलसिला शुरु किया।

मैंने कहा– ''दीपू, कल सायं चार बजे तुम्हारी ओर से दावत पक्की रही, उसी शंकर रेस्तरां में।''

''हाँ–हाँ बिलकुल पक्की।'' दीपू ने कहा।

''अच्छा दीपू। क्या–क्या रहेगा, दावत में? जरा मीनू का भी बखान कर जाओ।'' इस बार मदन से पूछा।

''रसगुल्ले, रसमलाई, बर्फी गाजर का हलवा, गर्म–गर्म दो–दो समोसे और चाय।''

दीपू का उत्तर था।

हम आपस में बातें कर रहे थे कि फोकटराम पतंग उड़ाना छोड़ हमारी ओर आ लपके। हमारी बातें सुनकर उनके मुँह में पानी भर आया। अपनी योजना सफल होती देख उनकी ओर जरा भी ध्यान दिए बगैर हम लोग तुरंत बाजार की ओर चल पड़े। हमें पूरा विश्वास हो गया कि फोकटराम निश्चित समय पर रेस्तरां में अवश्य पहुंचेंगे।

दूसरे दिन सायंकाल चार बजे फोकटराम को घंटाघर के पास बने शंकर रेस्तरां में पहुंचना था। इसलिए हम पांचों दोस्त भी आधे घण्टे पहले ही वहां चले गए और चाय नाश्ता कर जल्दी वहां से हट गए। तभी देखते क्या हैं कि लम्बे–लम्बे डग भरते हुए फोकटराम चले आ रहे हैं। उन्हें देखते ही हम फौरन वहां से नौ दो ग्यारह हो गए। फोकटराम पहुंच गए रेस्तरां के अन्दर।

एक घण्टे के बाद जब हम पांचों दोस्त टहलते हुए घंटाघर की ओर निकले तो शंकर रेस्तरां के सामने अच्छी खासी भीड़ जमा देख हम भी वहां जा पहुँचे। आखिर माजरा क्या है? फोकटराम रेस्तरां (उपहार गृह) में मैनेजर के साथ बुरी तरह भिड़े हुए हैं। मैनेजर साहब सिर से पाँव तक पसीने में सराबोर हैं। फोकटराम ने थूक से उनकी हालत बुरी बना रखी है। एक सेकेण्ड के लिए हमने मैनेजर को अपने पास बुलाकर पूछा तो असली बात का पता चल ही गया। हम लोगों की हँसी थमने का नाम नहीं ले रही थी।

मैनेजर की रोनी सूरत हो गयी थी। वह राम कहानी सुनाने लगे–

यह लड़का ठीक चार बजे यहाँ आ गया था। आकर इसने हाथ मुँह धोये और खँखार कर फिर बैरे से बोला– ''एक प्लेट रसगुल्ले, एक प्लेट रसमलाई, एक प्लेट

बड़ी तथा दो गर्म–गर्म समोसे शीघ्रता से। और हाँ दस मिनट बाद एक कप स्पेशल चाय।'' लगभग आधे घण्टे तक चबर–चबर मुँह चलाकर यहां सभी समान डकार गया। बैरा जब चौबीस रूपये का बिल इसके पास ले गया तो यह बगलें झाँकने लगा। बोला– ''रुक जाओ, अभी हमारे पाँच दोस्त और आने वाले हैं। उन्होंने मुझे दावत दी है। वे ही बिल चुकायेंगे। आधे घण्टे से यह अपने दोस्तों का इंतजार कर रहा है। मुझसे नहीं रहा गया तो मैं स्वयं इससे बिल लेने गया। देखते हैं, क्या हालत बना दी है इसने मेरी। रेस्तरां को बाप की दुकान समझ रखा है। अब आप ही बताइए इसकी क्या दवा है?''

हम लोगों को बीच–बचाव करते देख फोकटराम की बोलती बंद हो गयी। वह बहुत झेंपा। हमने हँसी रोकते हुए फोकटराम की नजर में नजर डाली। बेचारा पानी–पानी हो गया। उसने शर्म के मारे मुँह फेर लिया।

अपनी जेब से हम लोगों ने रुपये जुटाकर फोकटराम की जान बचायी। मैनेजर साहब को उनकी सीट पर बैठाया। मैनेजर साहब अब भी खरी–खोटी बुदबुदा रहे थे। फोकटराम चुप थे।

वह फोकटराम का फोकट में माल उड़ाने का अंतिम अवसर था। सच, वह इतना झेंपे कि इसके बाद उन्होंने कभी फोकट में खाने–पीने का नाम भी नहीं लिया।

● गुरुग्राम (हरियाणा)

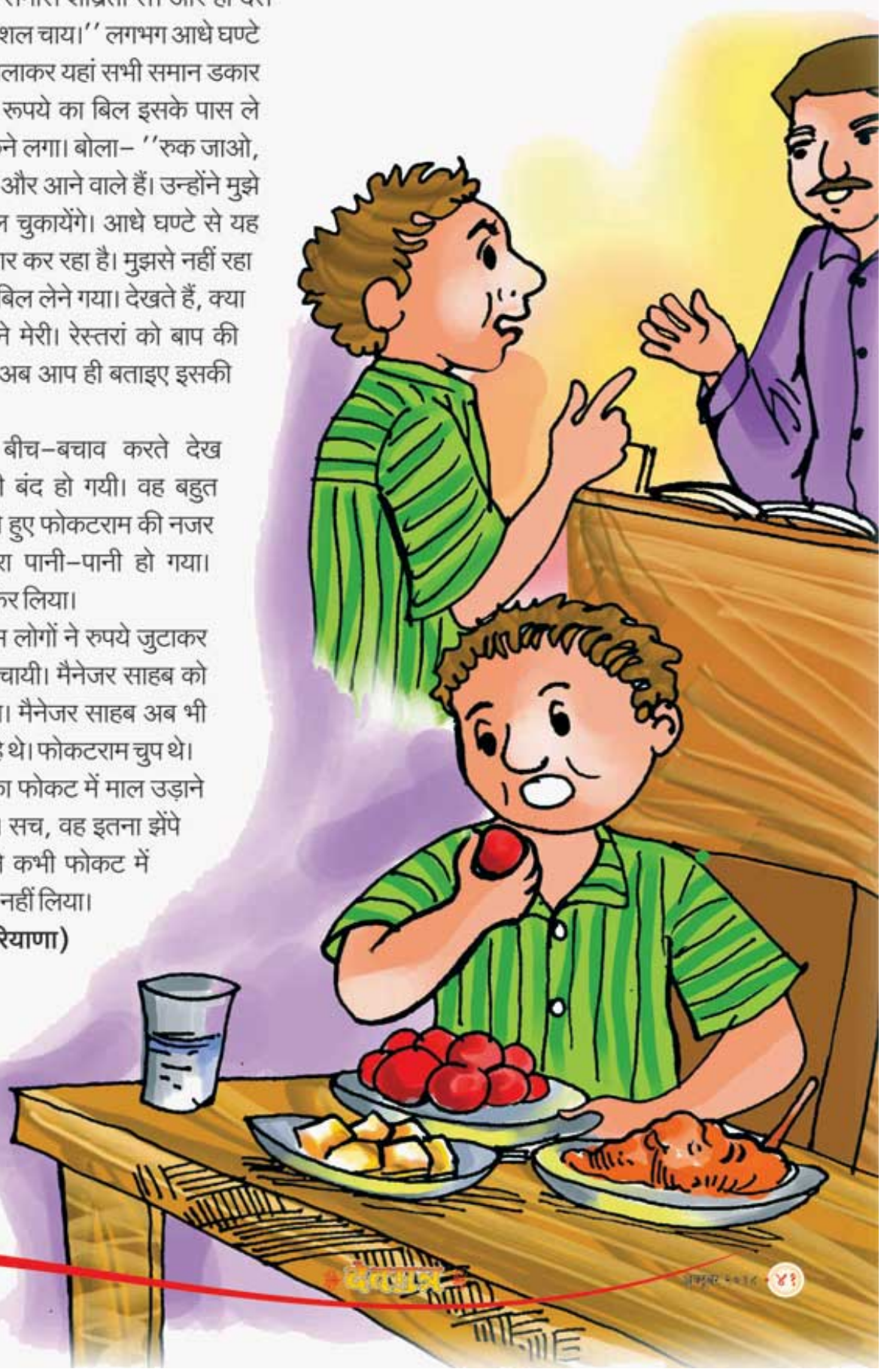

(जयंती : १५ अक्टूबर)

कर्मोपासक

डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

आलेख : डॉ. चक्रधर नलिन

भारत राष्ट्र के ग्यारहवें राष्ट्रपति, भारतरत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम संसार के वह अमिट हस्ताक्षर थे जिनका नाम सभी जनों द्वारा बड़े आदर से लिया जाता है। वह एक महान वैज्ञानिक और कर्मयोगी व्यक्ति ही नहीं वरन एक संवेदनशील व्यक्ति थे। उनको शिक्षा तथा विद्यार्थियों से बहुत लगाव था। भारत को महाशक्ति बनने की दिशा में उनके विज्ञान प्रोद्योगिकी और तकनीक के क्षेत्र में किए गए कार्य सदैव याद किए जायेंगे।

डॉ. कलाम का पूरा नाम डॉक्टर अबुल पाकिर जैनुल आब्दीन अब्दुल कलाम था। उनका जन्म १५ अक्टूबर १९३१ ई. में तमिलनाडू प्रांत के पावन स्थल रामेश्वरम् में एक निर्धन मछुआरा परिवार में हुआ था। उनके पिता जैनुल आब्दीन कम शिक्षित थे। वह अपनी धुन के पक्के तथा उदार स्वभाव के मनुष्य थे। कलाम अपने पिता की दस संतानों में एक थे।

बालक कलाम को अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के लिए घर-घर अखबार देने जाना पड़ता था। १९५४ ई. में उन्होंने सेंट जोसेफ कॉलेज तिरुचिरापल्ली से भौतिक विज्ञान से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने वर्ष १९५५ में मद्रास स्थित मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से वैमानिक अभियंता की शिक्षा पूरी की। वर्ष १९६० में वह रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान (डी.आर.डी.ओ) के वैमानिकी विकास संस्थान में वैज्ञानिक नियुक्त हुए। उन्होंने यहाँ काम करते हुए भारतीय सेना के लिए कम वजन के हेलीकाप्टर का निर्माण किया।

वर्ष १९६९ में उन्हें भारतीय अनुसंधान संगठन स्पेस लांच व्हीकल का निदेशक बनाया गया। उन्होंने परिणामस्वरूप रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित किया। उन्हें १९७० से १९९० के बीच पोलर सेटेलाइट लांच व्हीकल एवं एस.एल.वी.-४ बनाने का श्रेय प्राप्त हुआ।

उनकी योग्यता तथा क्षमताओं को देखते हुए उनको प्रथम परमाणु परीक्षण 'मुस्कुराते बुद्ध' को देखने हेतु आमंत्रित किया गया।

उन्हें प्रधानमंत्री द्वारा बैलस्टिक मिसाइल तथा इन्टीग्रेटेड मिसाइल्स के विकास का कार्य दिया गया। जिससे छोटी दूरी की मिसाइल 'अग्नि' और मध्यम दूरी की मिसाइल पृथ्वी का विकास हो सका। अब वह मिसाइल के जनक (मिसाइल मैन) के रूप में सारे देश में चर्चित हो गए।

डॉ. कलाम को जुलाई १९९२ से दिसम्बर १९९९

तथा रक्षा मंत्री का विज्ञान सलाहकार एवं सुरक्षा, शोध और विकास का सचिव बनाया गया। उनके प्रयासों से भारत का दूसरा परमाणु परीक्षण पोखरन–२ सफल हो सका।

१६ जुलाई २००२ को डॉक्टर कलाम को नब्बे प्रतिशत मतों से भारत गणराज्य का राष्ट्रपति चुना गया। वे इस पद पर २००७ तक रहे। वे एक सीधे, सरल, परम देशभक्त और ईमानदार व्यक्ति थे।

उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की जिनमें 'विंग्स ऑफ फायर' (जीवनी) 'गाइडिंग सोल्स डाइलाग्स ऑफ द पर्पज ऑफ लाइफ' (अध्यात्म) तथा 'इण्डिया २०२०' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

डॉ. कलाम को राष्ट्रपति बनने के पूर्व ही भारत का सर्वोच्च 'भारत रत्न' मिला था। उन्हें विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए भारत के नागरिक सम्मान के रूप में १९८१ में पद्मभूषण, १९९० में पद्म विभूषण तथा १९९७ में भारत रत्न दिया गया।

डॉ. कलाम को विश्व के ५० विश्वविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा डी.लिट. की उपाधियाँ प्रदान की गई। उन्हें अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए थे। वह संसार के अति सम्मानीयजनों में प्रमुख थे।

वह कर्म पर विश्वास करते थे तथा अच्छे काम करने में प्रसन्नता और गौरव का अनुभव करते थे।

डॉ. कलाम आदर्श पुरुष थे। उनका जीवन प्रेरक और अनुकरणीय है। उन्होंने जो दिशा दी है हमें उस ओर चलना चाहिए। डॉ. कलाम एक महान पुरुष थे। उनका दुखद और आकस्मिक निधन शिलांग, मेघालय में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए २७ जुलाई, २०१५ को हुआ।

उनके कार्य और कीर्ति अमर है। वह विश्व विभूति के रूप में सदैव याद किये जाते रहेंगें।

● **लखनऊ (उ.प्र.)**

चुटकुले

● **ऋषिमोहन श्रीवास्तव**

एक व्यक्ति रेल्वे पर अपना गुस्सा उतार रहा था। आपकी गाड़ियाँ समय पर कभी नहीं आतीं इन टाइम टेबल का क्या फायदा?

रेल्वे अधिकार– महोदय, यदि समय पर गाड़ियां आने लग जाए तो आप कहेंगे इन वेटिंग रूम का क्या फायदा?

****

एक धनवान व्यक्ति भोजन करने एक बड़े भोजनालय गया। वहां गलती से बैरे ने दाल की कटोरी उन पर गिरा दी। उस धनवान व्यक्ति के कपड़े खराब हो गए। उसने गुस्से में कहा– ''क्यों जी, तुम एक गधे को भी परोसने लायक नहीं हो।

बैरे ने नम्रता से जवाब दिया– ''मैं कोशिश तो कर रहा हूँ।''

****

एक यात्री समय काटने के हिसाब से दूसरे यात्री से बातचीत करने लगा। पहला यात्री– ''आपकी सूरत कुछ–कुछ पहचानी लग रही है।''

दूसरा यात्री– ''जी मैं कल ही दस साल बाद बरेली जेल से रिहा हुआ हूं।

दूसरे यात्री की बात सुनकर, बातचीत का सिलसिला रुक गया।

****

एक सज्जन ने दूसरे महाशय को नमस्कार किया। उन महाशय ने जवाब दिया– ''मैं मूर्खों को नमस्कार नहीं करता।''

पहले सज्जन ने तुरंत उत्तर दिया– ''पर मैं तो करता हूं।''

****

सेठ कंजूसमल– ''मैंने आपको पांच हजार रुपये का कर्ज दिया था, लगता है आप उसे लेकर भूल गए हैं।

कर्जदार– ''मैं भला कैसे भूल सकता हूँ। आपने देखा नहीं। मैं आपसे नजर बचाकर भाग रहा था।''

अनूठा यूरेनस

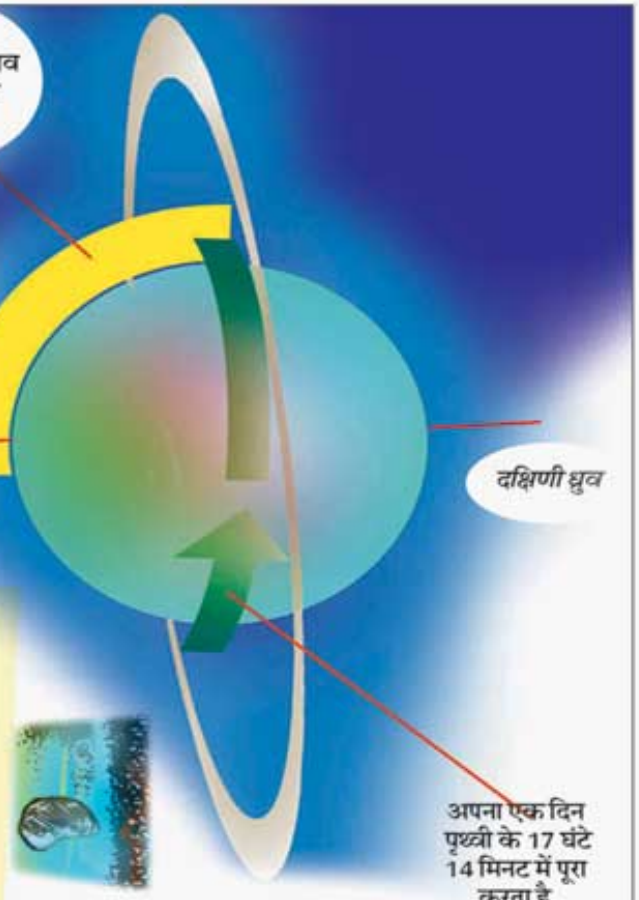

सचित्र प्रस्तुति- **संकेत गोस्वामी**

यूरेनस हमारे सौर मंडल क्रम में सातवां ग्रह है. 51,118 किलोमीटर व्यास का यूरेनस, बृहस्पति और शनि के बाद तीसरा सबसे बड़ा ग्रह है. इसके 27 चंद्रमा पहचाने जा चुके हैं. इसके इर्द-गिर्द 13 वलय हैं. जो मिट्टी, चट्टानों के टुकड़ों से बने हैं.

यह बेहद ठंडा है और यहां का तापमान -224 डिग्री सेंटीग्रेड है. इस पर ठंडी मीथेन गैस के बादल हैं. इसके चंद्रमा बर्फीले हैं और वलयों से दूर बाहर की ओर कायम हैं.

एक आश्चर्य जनक बात यूरेनस की ये है कि अन्य सभी ग्रहों से विपरीत घूमते हुए अपनी धुरी पर इसका झुकाव 97.90 डिग्री है. इसका मतलब यह है कि इसके उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध दोनों समान रूप से सूर्य का स्थिर प्रकाश प्राप्त करते हैं. इस पर सर्दी और गर्मी का मौसम पृथ्वी के 21 वर्षों जितने लम्बे होते हैं.

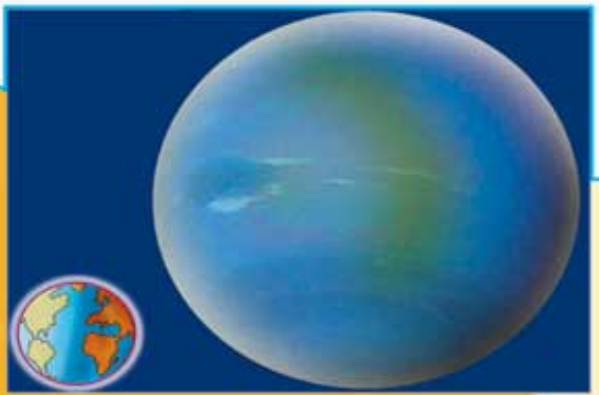

यह पृथ्वी से चार गुना बड़ा है, पर गुरुत्व बल में कम. इस पर जिस चीज का वजन 100 किलोग्राम है वह पृथ्वी पर 88.6 किलोग्राम की ही होगी.

इसके 27 चंद्रमा खोजे जा चुके हैं. जिनमें से 5 बड़े और प्रमुख हैं. बाकी सब बेहद छोटे हैं. प्रमुख 5 चंद्रमा ये हैं-

मिरंडा: 472 कि.मी. व्यास
यूरेनस से दूरी 129,800 कि. मी.

एरियल: 1169 कि.मी. व्यास
यूरेनस से दूरी 191,200 कि. मी.

अम्ब्रीयल: 1169 कि.मी. व्यास
यूरेनस से दूरी 266,000 कि. मी.

ओबिरीन: 1523 कि.मी. व्यास
यूरेनस से दूरी 582,600 कि. मी.

टाइटेनिया: 1578 कि.मी. व्यास
यूरेनस से औसत दूरी 435,900 कि. मी.

इसके चारों और पांच बहुत धुंधले वलय हैं जो अल्फा, बीटा, गामा, डेल्टा और इप्सिलान के हैं.

इसके वातावरण में शामिल है

85 प्रतिशत हाइड्रोजन, 12 प्रतिशत हीलियम और 3 प्रतिशत मीथेन.

बर्फीली तरल गैस, अमोनिया और मीथेन गैस के मिश्रण की सघन चादर

हाइड्रोजन का बाहरी वातावरण

मध्यकोर का तापमान 7000 डिग्री सेंटीग्रेड

1700 कि. मी. व्यास का मध्य चट्टानी कोर

यह भी जान लो कि इस ग्रह की खोज 1781 ई. में विलियम हर्षल ने की थी.

यह पृथ्वी के 84 वर्षों की अवधि में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है. जो शुक्र ग्रह की तरह उल्टी है, यानी पूर्व से पश्चिम की.

पुस्तक परिचय

विश्वविभूति महात्मा गांधी – अग्रगण्य बाल साहित्यकार **डॉ. चक्रधर नलिन** की महात्मा गांधी के जीवन चरित्र, विचार एवं योगदान पर सूचनात्मक कृति।

प्रकाशन – लवकुश प्रकाशन, ५२५/६२४ सेक्टर–ए महानगर, लखनऊ (उ.प्र.)

नया सवेरा – सुविख्यात बाल साहित्य सर्जक **अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'** का रोचक बाल उपन्यास। नन्ही मंजुला के पारिवारिक जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति।

प्रकाशन – विकल्प प्रकाशन २२२६/बी, प्रथम तल, गली नं. ३३, पहल पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली ११००३०

रोचक बाल एकांकी – बाल साहित्य जगत की सुपरिचित लेखिका **डॉ. प्रीति प्रवीण खरे** की जन्तु प्रेम, देश प्रेम, पर्यावरण जागरुकता, बेटी का महत्व, पर्व/त्यौहार का महत्व, खेल का महत्व आदि विषयों पर रोचक १४ बाल एकांकी।

प्रकाशन – मीरा पब्लिकेशन्स, ४९बी/३७, न्याय मार्ग, इलाहाबाद २११००१ (उ.प्र.)

बचपन की पचपन कविताएं- प्रसिद्ध बाल साहित्य लेखिका **डॉ. शशि शुक्ला** की संस्कारों को मनोरंजक ढंग से बालमन की पाटी पर उकेरने में सक्षम कलम से उद्भूत ५५ बाल कविताएँ।

प्रकाशन – सुभांजलि प्रकाशन, २८/११, अतीत गंज कालोनी, टी.पी. नगर, कानपुर २०८०२३ (उ.प्र.)

चांई मांई खेलो–बाल साहित्य जगत में कविता के जगमगाते २८ नक्षत्रों की चुनिदां बाल कविताएं जिन्हें संकलित व संपादित करने का सुकार्य किया है प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. नागेश पाण्डेय** 'संजय' ने। और सहयोग किया है सर्वश्री **सुरेन्द्र गुप्त 'सीकर'**, **रमेश मिश्रा 'आनन्द'**, व **चक्रधर शुक्ल** ने

प्रकाशन – बाल साहित्य संवर्धन संस्थान, १४२०, हनुमंत विहार, नौबस्ता, कानपुर २०८०२१

दादी की प्यारी गौरैया – ख्यात बाल रचनाकार **चक्रधर 'नलिन'** की सिद्ध लेखनी से जन्मी उमड़ते–घुमड़ते बादलों की भांति बाल मनोभूमि को भिगोती २६ बाल कविताएं।

प्रकाशन – बाल साहित्य संवर्धन संस्थान, १४२०, हनुमंत विहार, नौबस्ता, कानपुर २०८०२१ (उ.प्र.)

बाल साहित्य के माध्यम से शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए

- श्री अष्ठाना

इन्दौर। ११वें विश्व हिन्दी सम्मेलन, मारीशस में १९ अगस्त को गोस्वामी तुलसीदास नगर के गोपालदास नीरज सभागार में 'हिन्दी बाल साहित्य और संस्कृति' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता देवपुत्र के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना ने की। सह अध्यक्ष डॉ. अलका धनपत रहीं। बीज वक्तव्य डॉ. दिविक रमेश ने प्रस्तुत किया। सत्र के प्रमुख वक्ताओं में सर्वश्री देवेन्द्र मेवाड़ी, प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम एवं श्रीमती उषा पुरी (बाली) रहे। प्रो. मोहनलाल छीपा ने खुले संवाद में अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. दिविक रमेश ने कहा कि- 'जितना भी सृजनात्मक साहित्य होता है वह संस्कृति ही होता है। सृजनात्मक साहित्य अनुभव की कलात्मक अभिव्यक्ति है।' 'देवपुत्र' की चर्चा करते हुए आपने कहा कि पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर ही लिखा है बालकों में सृजनात्मक और अभिव्यक्ति कर सके। देवेन्द्र मेवाड़ी ने सैंधव सभ्यता से लेकर वैदिक काल तथा पुराणों से लेकर भक्तिकाल तक की चर्चा करते हुए कृष्ण लीलाओं को बाल साहित्य की पूर्व पीठिका बताया। डॉ. अलका धनपत ने मारीशस के बाल साहित्य की चर्चा की। डॉ. सुरेन्द्र विक्रम ने कहा कि 'आज का बाल साहित्य सपाट बयानी से इतर गंभीर लेखन कर रहा है। आज बाल साहित्य आन्दोलन के रूप में उभरा है। आपने साहित्यिक पत्रिकाओं में बाल साहित्य का कॉलम अनिवार्यतः होने की आवश्यकता बताई।' बाली से आयी श्रीमती उषा पुरी ने लोक साहित्य में बालकों के विकास का अक्षय भण्डार होने की बात कही। आपने विभिन्न बाल पत्रिकाओं को बच्चों के आकर्षण का केन्द्र बताया। विवेक गौतम, गिरिराज शरण अग्रवाल, प्रदीप राव एवं मनोहर पुरी आदि ने खुले संवाद में अपने विचार व्यक्त किए।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन के रूप में श्री अष्ठाना ने आज के बालकों में भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण बातों को सिखाए जाने पर बल देते हुए बाल साहित्य द्वारा शाश्वत मूल्यों के विकास की बात कही। आपने कहा 'आज का बच्चा परी कथाओं को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझना चाहता है। बच्चे को आज क्या करना चाहिए यह अनिवार्यतः समझना होगा।' 'युगधर्म' और 'राजधर्म' पर जोर दिया। अपने चिंता व्यक्त की कि 'आज भी बाल साहित्य को वह स्थान और सम्मान नहीं प्राप्त हो रहा है जो होना चाहिए। हम विश्व के मार्गदर्शक रहे हैं हमें बच्चों के भीतर यह भाव पैदा करना होगा। संवेदनाएं जगाना होंगीं राष्ट्र के प्रति भाव पैदा करना होगा।' सत्र का कुशल संयोजन डॉ. मधु पंत ने किया।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री मातृ

गर्भवती महिलाओं

पात्र हितग्राही : प्रथम ज
समस्त गर्भवती महिल

योजना में मिलने वाली राशि आँगनवाड़ी केन्द्र में पंजीयन
पूर्ति उपरांत पात्र हितग्राही को प्रोत्साहन राशि तीन कि

प्रथम किश्त	द्वितीय किश्त	
राशि रुपये 1,000/-	राशि रुपये 2,000/-	

प्रोत्साहन राशि Direct Benefit Scheme (DBT) के माध्यम से सीधे
ऑफिस खातों में जमा की जावेगी। संस्थागत प्रसव कराने पर पात्र हितग्रा
तहत् प्रोत्साहन राशि पृथक से मिलेगी।

अधिक जानकारी के लिए पास की आँगनवाड़ी कार्यकर्ता या ए.एन

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

mpwcd.nic.in mpwcdmis.gov.in esanchayika.mp.gov.in NNMWCD

ृ वंदना योजना

को नकद प्रोत्साहन

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

ीवित बच्चे से संबंधित
ाएं एवं धात्री माताएं

एवं निर्धारित शर्तों की
किश्तों में दी जावेगी।

तृतीय किश्त

राशि रुपये 2,000/-

उनके आधार से जुड़े बैंक/पोस्ट
ाही को जननी सुरक्षा योजना के

ा.एम. से सम्पर्क करें।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना
मातृ शक्ति, राष्ट्र शक्ति

POSHAN Abhiyaan
PM's Overarching Scheme for Holistic Nourishment
सही पोषण - देश रोशन

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

MP | संचालनालय महिला एवं बाल विकास, मध्यप्रदेश

बेचारा ठग!

चित्रकथा - देवांशु वत्स

श्रद्धांजलि

वे चलते चलते राह बन गए

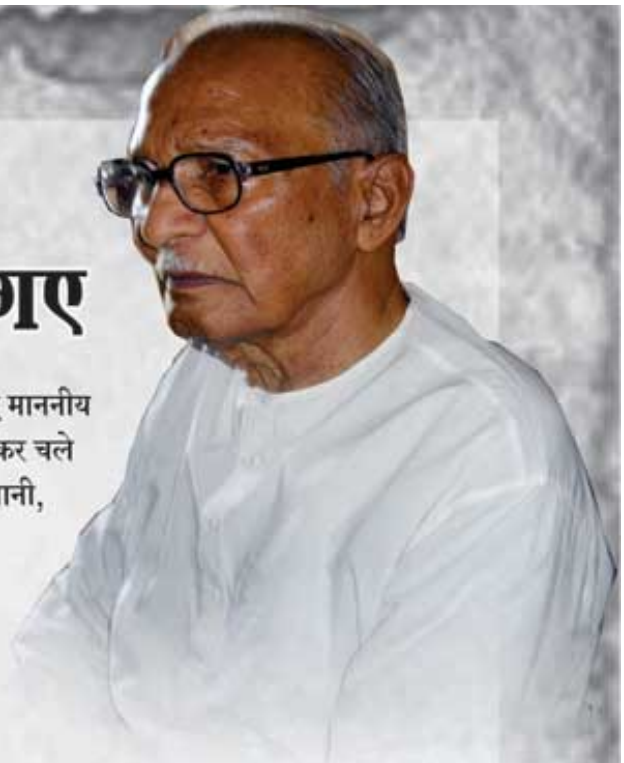

जन्म ५ अक्टू.१९३१ निर्वाह २१ अगस्त २०१८

जीवन के अंतिम क्षणों तक अपने व्यवहार से कुछ न कुछ सिखाते हुए माननीय रोशनलाल जी सक्सैना २१ अगस्त को सदा सदा के लिए हम सबको छोड़कर चले गए। उनकी जुझारू वृत्ति के दर्शन अंतिम क्षण तक होते रहे। उन्होंने 'हार नहीं मानी, रार नहीं ठानी'।

कुछ समय पूर्व भोपाल में विद्याभारती के क्षेत्रीय कार्यालय सी-१३ पर उनसे भेंट हुई थी। आंखों में शून्यता थी लगता था कि उन्होंने अपना काम समाप्त कर लिया है। अपने आपको समेट लिया है सब ओर से। परन्तु अपने आत्मीयों के लिए तो वही सदाबहार व्यवहार। चाय, भोजन और विश्राम की चिंता। भोपाल और विशेष रूप से सी-१३ पर पहुंचकर उसे किसी भी प्रकार का कष्ट हो यह उन्हें स्वीकार ही नहीं था। एक युग जैसा बीत गया था यह चिंता करते करते उन्हें।

शिशु मंदिर, ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय, संस्कार केन्द्र तथा वनवासी विद्यालय उनमें तो उनके प्राण बसते थे। अवसर मिलने पर वह निकल न जाए इसकी चिंता रहती थी उन्हें, इसलिए स्वास्थ्य कैसा भी रहे वे वहां पहुंचकर विद्यार्थी, आचार्य परिवार, भवन, व्यवस्थापन में लगे कार्यकर्त्ता सभी की समान रूप से चिंता करते हुए आगे का लक्ष्य भी तय करा देते थे।

उन प्रारम्भिक दिनों की कल्पना कीजिये-गणित का एक स्नातकोत्तर विद्यार्थी, विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर एक महाविद्यालय में प्राध्यापक बनता है और कुछ ही दिनों में मातृभूमि की सेवा का व्रत लेकर शासकीय सेवाओं के बंधन से अपने आपको मुक्त कर संघ के प्रचारक के रूप में अपने आपको समर्पित कर देता है मातृ भूमि के चरणों में। फिर जो कुछ करने को मिला वही अपना सर्वस्व।

रीवा में मध्य प्रदेश के पहले सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना से लेकर उसके क्षेत्रीय संगठन मंत्री, वनवासी शिक्षा के प्रमुख से लेकर अखिल भारतीय मार्गदर्शक तक कितने ही दायित्वों का निर्वाह। देवपुत्र का तो उन्हें जनक ही कहा जा सकता है

एक निस्पृह कर्मयोगी सा जीवन। कार्यकर्त्ताओं के लिये सदा झरता प्रेम का निर्झर, सहस्रों घरों तक अबाध पहुंच वाला यह 'महाभाग' अब नहीं होगा हमारे बीच। किन्तु उनके रोपे हुये वृक्षों की छाया हमें बहुत समय तक शीतलता देती रहेगी और स्मरण कराती रहेगी।

यूं तो हर बगिया में,
ऐसा एक फूल हुआ करता है,
जिसके होने से बगिया,
की शोभा दुगनी हो जाती है।
एवं जिसके झरने से,
बगिया सचमुच सूनी हो जाती है।

विनम्र प्रणाम महामना !!

- कृष्णकुमार अष्ठाना
प्रधान सम्पादक, देवपुत्र

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१८-२०२०

आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

www.mitva.in

mitva

Naya Daur - Nayi Raunak

मितवा की बढ़ती रेंज से बढ़ाएं घर की रौनक!

अब मितवा सोलर रेंज के साथ रौशन करें अपना घर, दुकान, अस्पताल व स्कूल।

RAL

(विप्पो के को-प्रोमोटर)

प्रस्तुत करते हैं

मितवा

पोर्टेबल सोलर रेंज

• सोलर लाइट • सोलर लैंटर्न

• सोलर फैन

वितरक या विक्रेता बनके जुड़ें मितवा के सौर ऊर्जा दौर के साथ, अपनी आय को दें नई ऊँचाई, कॉल करें:

1800 1038 222 (सोमवार से शनिवार, 9:30 AM से 6 PM)

RAL

Global brands. Built on trust.

RAL Consumer Products Ltd. B-7/2, Okhla Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110020

Toll Free No.: 1800 1038 222 | Email : info@ral.co.in | www.ralindia.co.in

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक – कृष्णकुमार अष्ठाना